चन्दामामा
अगस्त १९७६
1

मन चाहा तो भरपूर मनोरंजन !

रेडियो सिलोन

आकाशवाणी के कार्यक्रमों में सारे परिवार के लिए मनोरंजन चाहे तो 'रेडियो सिलोन' से बढ़कर दूसरा कोई नहीं है ! अंग्रेजी, हिन्दी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़ तथा मलयालम भाषाओं के कार्यक्रमों में साफ़ और स्पष्ट कार्यक्रम चाहें तो 'रेडियो सिलोन' सुनना ही पड़ेगा ! रेडियो के समस्त स्टेशनों को घुमाकर देखिए—जो स्टेशन साफ़ दिखाई देता है—वह निश्चय ही 'रेडियो सिलोन' है !

अंग्रेजी—प्रति दिन

0600 to 1000 hrs	15525 KHZ (19 मी)
	9720 KHZ (31 मी)
	6075 KHZ (49 मी)
1800 to 2300 hrs	15425 KHZ (19 मी)
	9720 KHZ (31 मी)
	7190 KHZ (41 मी)

हिन्दी—सोमवार से शनिवार तक

0600 to 1000 hrs	11800 KHZ (25 मी)
1200 to 1400 hrs	7190 KHZ (41 मी)
1900 to 2300 hrs	11800 KHZ (25 मी)
	6075 KHZ (49 मी)

हिन्दी—केवल रविवार

0600 to 1400 hrs	11800 KHZ (25 मी)
	7190 KHZ (41 मी)
1900 to 2300 hrs	11800 KHZ (25 मी)
	6075 KHZ (49 मी)

तमिल—प्रति दिन

1630 to 1900 hrs	11800 KHZ (25 मी)
	6075 KHZ (49 मी)

मलयालम—प्रति दिन

1530 to 1630 hrs	11800 KHZ (25 मी)
	7190 KHZ (41 मी)
	6075 KHZ (49 मी)

तेलुगु—प्रति दिन

1430 to 1530 hrs	11800 KHZ (25 मी)
	7190 KHZ (41 मी)

कन्नड़—प्रति दिन

1400 to 1430 hrs	11800 KHZ (25 मी)
	7190 KHZ (41 मी)

विदेशों में अपने व्यापार की वृद्धि चाहने वाले विज्ञापनदाता निम्न लिखित पते से संपर्क करें !

रेडियो
अड्वर्टाइसिंग
सर्विसेस

सिसिलकोर्ट
संक्ट्स ब्राउनी रोड,
बंबई - 400039
दूरभाष : 213046/7
ग्राम्स : RADONDA

30, फिफ्त ट्रस्ट क्रास स्ट्रीट,
मंदवल्लिपाक्कम्
मद्रास - 600028
दूरभाष : 73736
ग्राम्स : RADONDA

राम और श्याम बदमाशों के चंगुल में!

"देखो वो भागे बदमाश,
सोने के जेवर ले साथ."

"दोनों को ले चलो उठा,
वर्ना चलेगा
पुलिस को पता."

राम श्याम को मोटर में बिठाकर
मीलों दूर ले गये भगाकर.

काली कोठरी में कर बंद
दोनों को किया बहुत तंग

"पुलिस अब आती होगी राम
मत हो तुम इतना परेशान."

"छोड़ता आया मैं रसीले निशान
आओ खायें पॉपिन्स, करें आराम."

"रसीली पॉपिन्स ने हमें बचाया
रास्ते भर मैं उन्हें फेंकता आया."

चन्दामामा-कैमल
रंग प्रतियोगिता
निःशुल्क प्रवेश

इनाम जीतिए
कैमल–पहला इनाम १५ रु.
कैमल–दूसरा इनाम १० रु.
कैमल–तीसरा इनाम ५ रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पते पर भेजिए चंदामामा, डाल्टन एजन्सीज्, 'कोरीथिआन' फ्लैट नं. ५, २ रा माला, १७ ऑर्थर बंदर रोड, कुलाबा, बम्बई-४०० ००५.

परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम ....

उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।
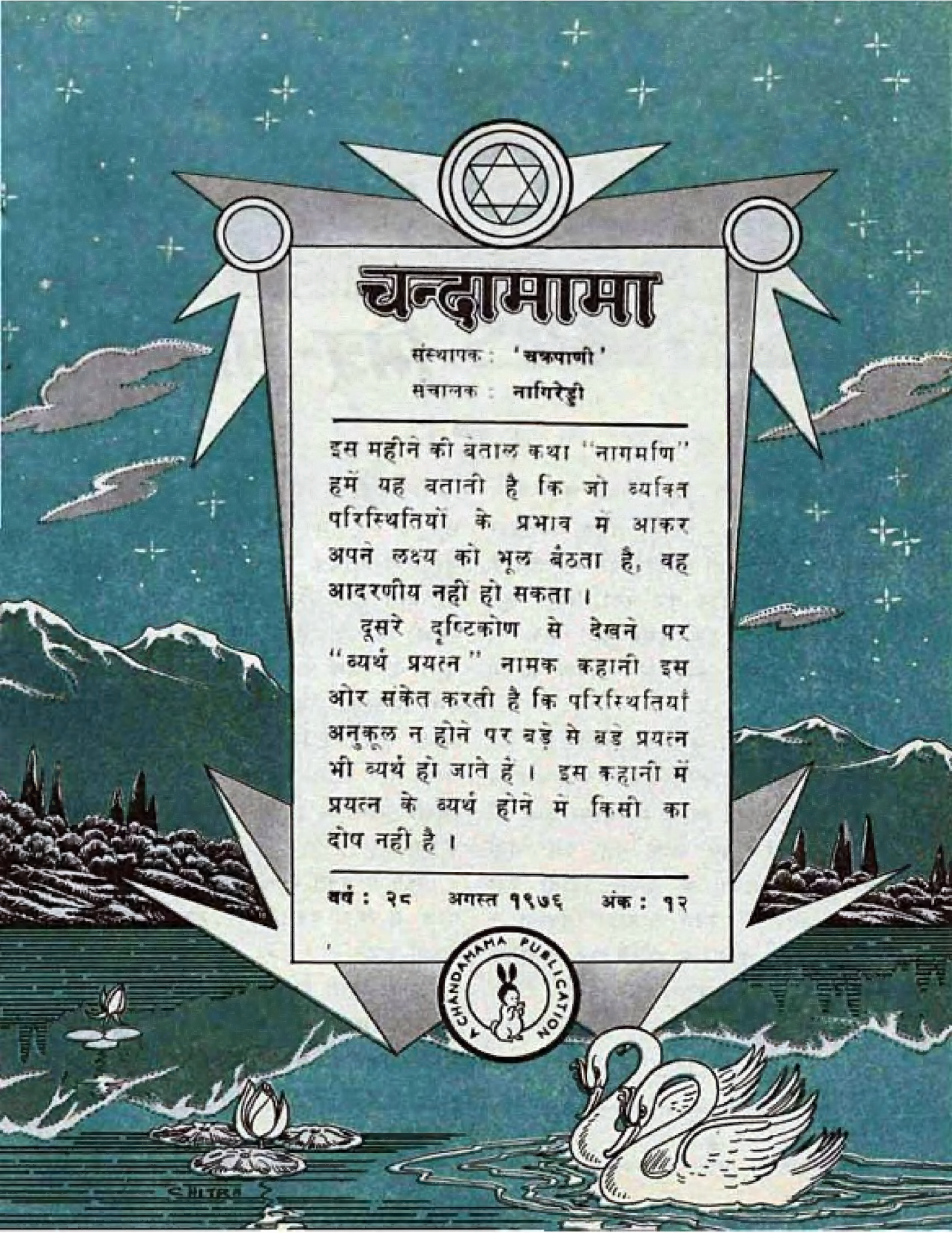
चित्र भेजने की अंतिम तारीख: २०-८-१९७६

CONTEST NO 3

'Name and address should be written in ENGLISH'

Results of Chandamama - Camlin Colouring Contest No. 2 (Hindi), May '76

1st Prize: Kamaljit Singh Nara, New Delhi-16. *2nd Prize:* Rajeshwar Chowhan, New Delhi-22. *3rd Prize:* Rajivkumar Likha, New Delhi-52. *Consolation Prizes:* Pramodkumar Jain, New Delhi-51. Maruti Thakur, Kanpur. Vijay Kumari, Modinagar. Binakumari, Jullendar. Kishore Kumar, Pali. *Merit Certificates:* Swati Nandkumar Karnik, Bombay-28. Oram Narayan, Hyderabad-8. Purnima Sharma, New Delhi-23. Arvindra Singh Sanchu, Delhi-51. Rakesh Kumar Ghai, New Delhi. Dindayal Singh, Delhi-7. Abhay, Kanpur-16. Bina Rani Gupta, Lucknow-1. Padmavati, Nandini Mines. Anjana; Modinagar.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "नागमणि" हमें यह बताती है कि जो व्यक्ति परिस्थितियों के प्रभाव में आकर अपने लक्ष्य को भूल बैठता है, वह आदरणीय नहीं हो सकता ।

दूसरे दृष्टिकोण से देखने पर "व्यर्थ प्रयत्न" नामक कहानी इस ओर संकेत करती है कि परिस्थितियाँ अनुकूल न होने पर बड़े से बड़े प्रयत्न भी व्यर्थ हो जाते हैं । इस कहानी में प्रयत्न के व्यर्थ होने में किसी का दोष नही है ।

वर्ष : २८ अगस्त १९७६ अंक : १२
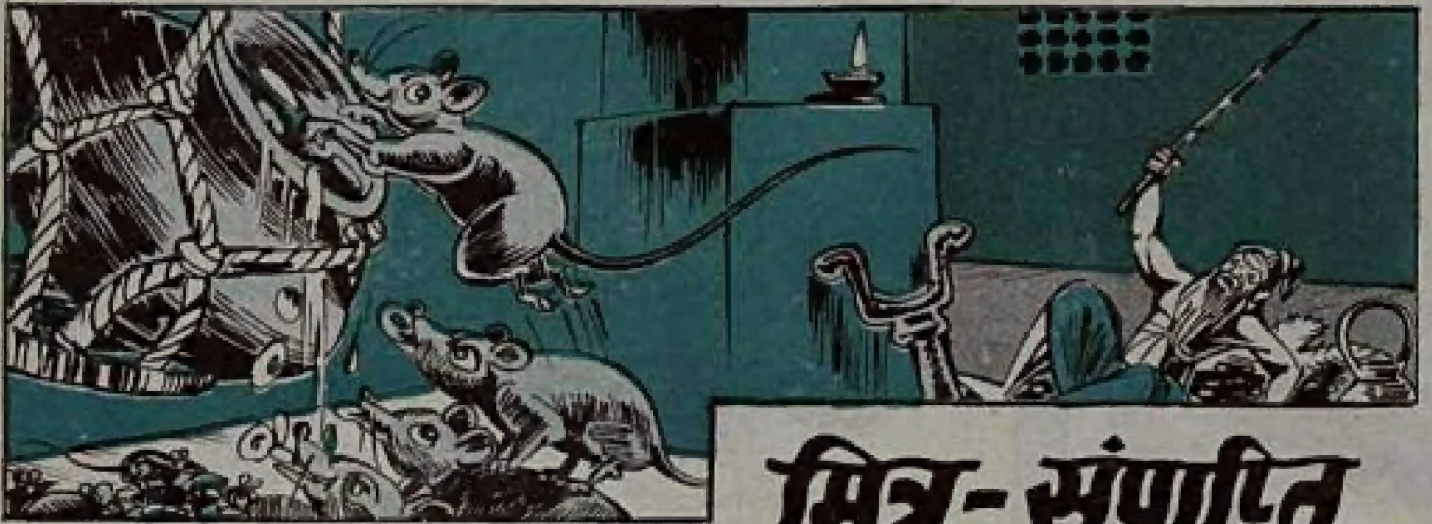
मित्र-संप्राप्ति

[३७]

कछुए ने कौए से पूछा–"यह चूहा कौन है? तुम्हारे लिए सहज आहार बननेवाला यह चूहा तुम्हारे पेट में रहने के बजाय तुम्हारी पीठ पर क्यों सवार है? वास्तव में तुम इसे क्यों यहाँ तक ढो लाये हो? इसका कोई असाधारण कारण होगा?"

"इस चूहे का नाम हिरण्यक है! यह मेरा प्रिय मित्र है! यह किसी कठिनाई में था, अब तुम्हारी खोज में आया हुआ है, मेरे पूछने पर वह साफ़-साफ़ बता नहीं रहा है। इसलिए मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं जानता।" कौए ने उत्तर दिया।

कौए तथा कछुए के पूछने पर हिरण्यक (चूहे) ने अपनी कहानी यों सुनाई :

दक्षिण देश में महिलारूप्य नामक एक नगर है। वहाँ पर एक बहुत बड़ा शिवालय है। शिवालय के समीप में एक मठ है। उस मठ के एक कमरे में चूडाकर्ण नामक एक सन्यासी रहता है। वह प्रति दिन भिक्षा पात्र लेकर नगर में भिक्षा माँगता है। उस नगर में अनेक धनी थे, जिस कारण उसे चीनी व गुड़ से बनी मिठाइयाँ, दाडिम, आम जैसे अच्छे-अच्छे फल भी मिल जाते थे। उनमें से थोड़ा-सा भाग खाकर बाक़ी हिस्सा भिक्षा पात्र में ही दीवार पर टांग दिया करता था।

रात के वक्त मैं तथा मेरे अनुचर भिक्षा पात्र में कूद पड़ते और स्वादिष्ट पदार्थ खाया करते थे।

उन्हीं दिनों में बृहस्पति नामक सन्यासी का एक मित्र उसे देखने आया। वह बड़ा मोटा-ताजा था और उसका पेट भारी था।

अंतिम पृष्ठ का चित्र

सन्यासी चूडाकर्ण ने बृहस्पति से पूछा—"मित्रवर, आज तक तुम कहां-कहां भ्रमण करते थे? क्या क्या देखा है? बताओ तो सही!"

"बहुत समय पूर्व कार्तिक पूर्णिमा के दिन पुष्कर तीर्थ में हम दोनों ने स्नान किया था, शायद तुम्हें याद होगा! उस भीड़ में हम दोनों एक-दूसरे से अलग हो गये, फिर मिल न पाये! इसके बाद मैंने हरिद्वार, प्रयाग, काशी इत्यादि तीर्थों का सेवन करके अनेक विचित्र देखे।" इन शब्दों के साथ बृहस्पति तीर्थों की विशेषताएँ बता रहा था, तब मैं भिक्षा पात्र में प्रवेश करके वे पदार्थ खाने लगा। तब सन्यासी ने मुझे डराने के लिए भिक्षा पात्र पर अपनी लाठी से मार दिया।

इसे देख बृहस्पति खीझकर बोला—"दोस्त, यह क्या है? तुम तीर्थ की विशेषताएँ सुनने की इच्छा प्रकट करके लाठी से इस प्रकार आवाज क्यों करते हो? क्या तुम्हारी सुनने की इच्छा नहीं है?"

इस पर चूडाकर्ण ने कहा—"मित्रवर! नाराज मत होओ! एक चूहा अपने अनुचरों के साथ भिक्षा पात्र में प्रवेश करके मेरे छिपाये गये पदार्थों को खा रहा है।"

"यहाँ पर क्या एक ही चूहा है या अनेक?" बृहस्पति ने पूछा।

"अनेक चूहे हैं, पर मैं उन पर विशेष ध्यान नहीं देता। यह तो उनका सरदार है। यह मेरी बिलकुल परवाह नहीं करता।" चूडाकर्ण ने उत्तर दिया।

"उसके इस साहस का कोई ज़बर्दस्त कारण होगा। बहुत समय पूर्व एक ब्राह्मणी ने तिल की दाल के बदले कच्चा तिल ले लिया है, तो इसका एक कारण भी तो है।" बृहस्पति ने कहा।

"वह कैसी कहानी है?" चूडाकर्ण ने पूछा।

इस पर बृहस्पति ने यों सुनाई:

तिल की दाल के बदले कच्चा तिल

एक बार वर्षा ऋतु में मैंने एक नगर के ब्राह्मण से निवेदन किया कि वर्षा ऋतु के समाप्त होने तक मुझे उनके घर में रहने दिया जाय! ब्राह्मण ने मान लिया। एक दिन उस ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा—"कल दक्षिणायण का पुण्यकाल प्रारंभ होने जा रहा है। उस संक्रमण के समय ब्राह्मणों को बुलाकर दावत देंगे।"

इस पर ब्राह्मणी नाराज़ होकर बोली—"हमें खुद खाने को नहीं, ऐसी हालत में हम अन्य ब्राह्मणों को कहाँ से खिलायेंगे?"

"ऐसा मत कहो! गरीबों को अपनी शक्ति-भर योग्य व्यक्तियों को खिलाना होगा! किफ़ायत करना बुरा नहीं है, पर प्रलोभन ठीक नहीं है। इसी प्रकार प्रलोभन में पड़कर एक सियार ने अपने प्राण गंवा दिये।" ब्राह्मण ने कहा।

"वह कैसी कहानी है?" ब्राह्मणी ने पूछा। उसके पति ने वह कहानी यों सुनाई :

प्रलोभनवाला सियार

एक दिन प्रातःकाल एक शिकार ने जंगल में एक जंगली सुअर को अपने बाण से मारा। मार खाकर भी सुअर नहीं मरा, उसने शिकारी पर हमला करके उसके पेट को चीर डाला। शिकारी मर गया, साथ ही कुछ ही क्षणों में सुअर भी वहीं गिरकर मर गया।

इसके थोड़ी देर बाद उधर एक सियार आ निकला। उसने मन में सोचा—"वाह! मेरी क़िस्मत भी कैसी प्रबल है? इन लाशों को मैं कई दिन तक खा सकता हूँ। इस वक़्त धनुष की प्रत्यंचा (चमड़े की) खा डालूँ तो मेरा पेट भर जाएगा।"

शियार ने धनुष को उठाकर प्रत्यंचा को कुतर-कुतरकर खाते हुए मन में कहा—"जहाँ तक हो सके थोड़ा थोड़ा खाना चाहिए!"

लेकिन ज्यों ही उसने प्रत्यंचा को काटा, त्यों ही धनुष तनकर सियार के मुँह में से सिर में धंस गया और वह वहीं पर मर गया।

माया सरोवर

[७]

[जटाओंवाले बरगद के निकट जयशील तथा सिद्ध साधक को एक प्राचीन ताड़-पत्रोंवाला ग्रंथ प्राप्त हुआ। मगर युवरानी और युवराजा का पता न लगा। वे निकट के पहाड़ों की ओर चल पड़े। उस वक़्त एक गाँव की जनता ज्वार के खेतों की ओर बढ़ी, तब एक विकृत आकृतिवाले ने अपने हाथी को उन पर उकसाया। बाद–]

अपनी ओर बढ़नेवाले हाथी तथा उस पर बैठे मगर-मच्छ की आकृतिवाले व्यक्ति को देखते ही सारे गाँववाले भयकंपित हो उठे। एक-दो पल तक वे लोग निश्चल मूर्तिवत खड़े रह गये। विकृत आकृतिवाले ने अपने हाथी को उनकी ओर दौड़ाया और ऊँचे स्वर में ललकारा–"तुममें से जो लोग भागना चाहते हो, उन्हें छोड़ बाक़ी लोगों की कोई हानि न होगी।"

ये बातें सुनने पर गाँववालों की थोड़ी हिम्मत बंध गई। लोगों ने भाँप लिया कि हाथी पर बैठा हुआ व्यक्ति भले ही विकृत आकृतिवाला हो, पर उसकी बोली से वह जरूर मनुष्य ही होगा।

ग्रामवासी चकित हो मौन खड़े थे, उन्हें पुकारकर फिर विकृत आकृतिवाला बोला– "तुम लोगों का मुखिया कौन है? इस मचान पर रहनेवाला लड़का क्या तुम्हारे

उसने आप की सारी बातें हमें बताईं। लेकिन उसने जिस विचित्र हाथी और विचित्र आदमी की बात कही, दर असल उस पर हम यक़ीन नहीं कर पाये। इन पहाड़ों और जंगलों में भी सभी प्रकार के खूँख्वार जानवरों के साथ जंगली हाथियों के झुंड भी स्वेच्छा पूर्वक घूमा करते रहते हैं! हमने सोचा कि ऐसे ही हाथियों का झुंड हमारे ज्वार के खेतों को तहस-नहस करने आया होगा!"

हाथी पर बैठे मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने हाथ उठाकर हाथी के सिर पर दे मारा, तब कहा—"अबे मुखिये, तुमने असली बात को छोड़ अंट-संट बातें बहुत बताईं, लेकिन मुझे यह बताओ कि मेरे वास्ते खाना और वैद्य को ले आये हो या नहीं? मैंने लड़के से कहला भेजा था कि शीघ्र मेरे लिए इन दोनों चीज़ों का इंतज़ाम करें। पर मेरी बात पर तुम लोगों ने ज़रा भी ध्यान नही दिया, उल्टे अंट-संट बातें हांके जा रहे हो!"

ही गाँव का है? मैंने उससे कहा था कि मेरे वास्ते खाना और एक वैद्य को भी बुलाकर शीघ्र लौटे! लेकिन ऐसा लगता है कि तुम लोग लाठी और भाले लेकर मेरा वध करने आये हुए हो! मेरी बात सही है न?"

तब तक गाँव का मुखिया संभल गया था। उसे लगा कि वैसे इसकी आकृति भयंकर ज़रूर है, पर अन्य बातों में यह भी हम जैसा एक साधारण आदमी है! फिर क्या था, उसने हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए कहा—"मगर-मच्छ महाशय! आप हमको क्षमा करें! आप ने जिस लड़के की बात बताई, वह हमारे ही गाँव का है!

विकृत आकृतिवाले का क्रोध देख गाँव का मुखिया एक क़दम पीछे हटा, तब बोला—"मगर-मच्छ महाशय! आप के वास्ते मेरे घर बढ़िया मिष्टान्न तैयार कराये जा रहे हैं! अब वैद्य की बात रही, एक नहीं, दो वैद्यों को हम अपने साथ ले आये हैं!"

गाँव का मुखिया बड़ा ही चालाक और बुद्धिमान था। उसने अपने हाथ की टोपवाली छड़ी को ऊपर उठाकर गाँववालों की तरफ़ मुड़कर कहा–"सुनो, तुम में से एक-दो आदमी अभी दौड़कर गाँव में चले जाओ, और मगर-मच्छवाले साहब के वास्ते जल्द खाना लेते आओ! बिलकुल देरी न हो, समझें। हाँ, सुनो! वैद्य चरकाचारी कहाँ? वीर नारायण कहाँ मर गया है?"

मुखिये की बात पूरी न हो पाई थी कि भीड़ में से कुछ लोगों ने चरकाचारी तथा वीरनारायण को आगे ढकेल दिया। मगर वे डर के मारे काँपते हुए भीड़ के पीछे छिपने की सोच रहे थे। मुखिये ने जाकर चरकाचारी तथा वीरनारायण के हाथ पकड़कर उन्हें आगे की ओर खींच दिया, तब मगर-मच्छवाले से बोला–"मगर-मच्छ साहब! ये ही हमारे ग्राम के वैद्य हैं। दोनों बड़े ही कुशल हैं! ये बड़े ही अच्छे ढंग से आप का इलाज कर सकते हैं। आप को जरा भी फ़िक्र करने की जरूरत नहीं।"

मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने उन दोनों की ओर देख अपने सिर पर स्थित सिरस्त्राण को खींच लिया। अब उसका चेहरा गाँववालों को साफ़ दिखाई दे रहा

था। उसकी उम्र चालीस साल से अधिक की न होगी। गोरा रंग, कंधे को छूनेवाले घुंघराले काले केश!

"ओह! यह तो साधारण आदमी है! पर कोई राज परिवार का मालूम होता है!" वीरनारायण ने चरकाचारी से कहा।

"राक्षस तो कामरूपी होते हैं! वे कुछ ही क्षणों में अपने वांछित रूप को प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन मैंने अपने गुरु के सामने शपथ ली थी कि रोगी चाहे राक्षस हो या पिशाच, मैं जरूर इलाज करूँगा। अब मैं अपने कर्तव्य का पालन करूँगा।" चरकाचारी ने कहा।

"चरकाचारीजी, मैंने भी अपने पिता के सामने ऐसी ही शपथ ली है। अच्छा, अब देरी क्यों करें? आगे बढ़ो।" वीरनारायण बोला।

मुखिये ने भाँप लिया कि दोनों वैद्यों का डर जाता रहा है! इसलिए वह अलग हट गया। तब चरकाचारी और वीर नारायण हाथी के निकट पहुँचे। चरकाचारी ने सर उठाकर पूछा—"मगर-मच्छ महाशय! कृपया यह बताइये, आप किस तरह की बीमारी के शिकार हो गये हैं? उसके क्या लक्षण हैं?"

यह सवाल सुनकर मगर-मच्छ की आकृतिवाला क्रुद्ध हो उठा और बोला—"अबे, तुझे आँखों की बीमारी तो नहीं है न! तुम्हें याद भी है कि मैंने तुम्हारे गाँव के लड़के से इसके पूर्व ही क्या कहला भेजा था? लो, देखो, मेरी बगल में जो तलवार चुभी है, उसे इस तरह सावधानी से निकालनी है जिससे मेरे प्राणों के लिए कोई खतरा न हो! अपनी मूर्खतावश मेरे प्राणों के लिए खतरा पैदा किया तो तुम दोनों को इस हाथी के द्वारा कुचलवा दूंगा। समझें!"

इस पर चरकाचारी झट से एक क़दम पीछे हटाकर बोला—"हुजूर! शस्त्र-चिकित्सा में इस वीरनारायण की कोई समता नहीं कर सकता। उसके द्वारा तलवार को बाहर निकालने दीजिए। इस बीच में घाव को भरने के लिए आवश्यक जड़ी-बूटियाँ जंगल से लेते आऊँगा।" इन शब्दों के साथ वह निकट की झाड़ियों की ओर चल पड़ा।

"चरकाचारीजी! ज्यों ही मैं तलवार निकालूंगा, त्यों ही आप को घाव पर पट्टी बाँधनी होगी, वरना सारा खून बह जाएगा। इसलिए जल्दी आ जाओ।" वीरनारायण चिल्ला उठा।

इसके बाद मगर-मच्छ की आकृतिवाले के हाथ का सहारा पाकर वीरनारायण हाथी पर चढ़ गया। विकृत आकृतिवाले

की बगल में धंसी तलवार को सावधानी से जांचकर बोला–"हुजूर! यह तलवार तो खूब चमक रही है! यद तो साधारण तलवार नहीं, किसी राज परिवार की तलवार मालूम होती है।"

ये बातें सुन विकृत आकृतिवाला खीझ उठा, फिर एक बार कराहकर बोला–"अरे, इसमें क्या शक है? यह राज परिवार की ही तलवार है! एक घमण्डी राजकुमार ने उद्दण्डतापूर्वक मेरी बगल में यह तलवार भोंक दी है। मगर-मच्छ के चमड़ेवाले इस कवच ने मेरे प्राण बचाये हैं। मैं उस युवक को प्राणों के साथ पकड़ना चाहता था। इसी प्रयत्न में मैं अकेला यह खतरा मोल चुका हूँ। मेरे साथी सब भाग गये हैं। मैं अकेला इस प्रदेश में भटक रहा हूँ।"

यह जवाब सुनने पर वीरनारायण के दिमाग में राजकुमार तथा राजकुमारी के अपहरण की बात याद आ गई। उसने सोचा कि जंगल में से जबर्दस्ती उन्हें उठा ले जानेवाले दल का व्यक्ति होगा यह! अब चाहे तो वह तलवार को निकालने के प्रयत्न में उसे इधर-उधर खूब हिलाकर इसके प्राण लिये जा सकते हैं, मगर ऐसा करने से राजकुमार तथा राजकुमारी जहाँ बन्दी हैं, उनका रहस्य प्रकट न होगा। इसलिए वीर नारायण ने सोचा कि इस दुष्ट की रक्षा करके इसे राजा के हाथ सौंप देना उचित होगा। उसके दिमाग में एक साथ ये सारी बातें कौंध गईं।
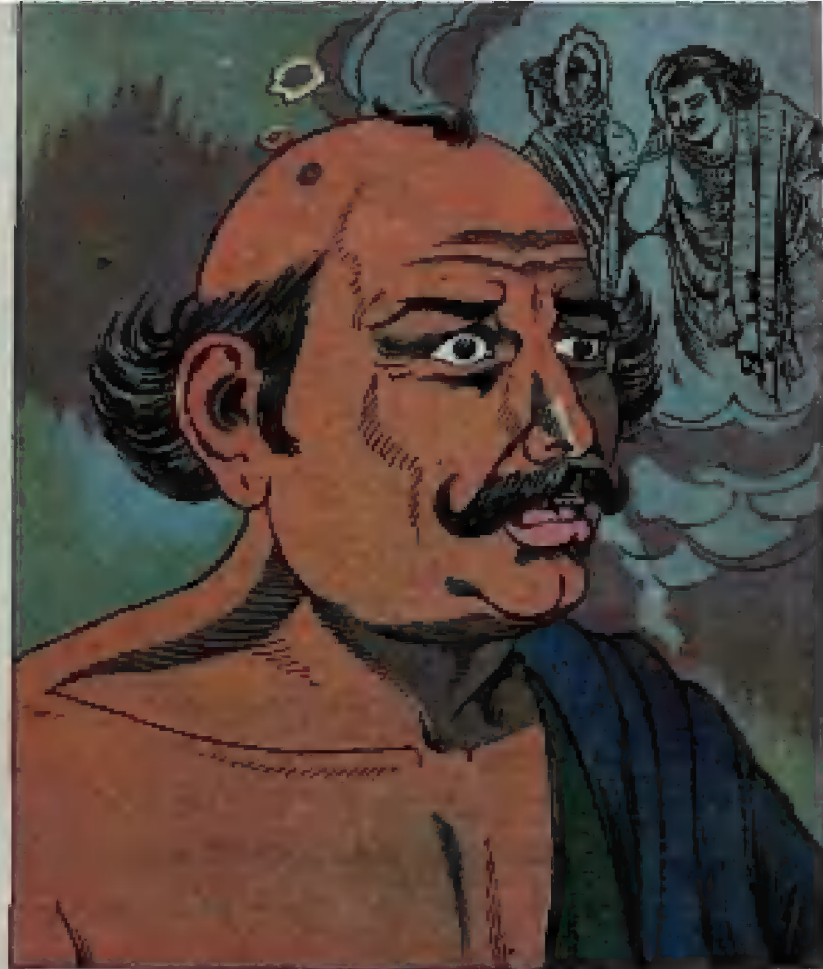
इसके बाद वीरनारायण थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब अपने साथ लाई गई छुरियों तथा लोहे की सलाखाओं को थैले में से निकालते हुए बोला–"हुजूर! चरकाचारी को लौटने दीजिए! तलवार के निकालते ही पट्टी न बांध दी जाय तो खतरा पैदा होगा!" फिर दूर खड़े मुखिये से बोला–"यहाँ पर हुजूर का इलाज करने के बाद इन्हें तुरंत अपने गाँव ले जाना होगा। आप अभी किसी

को भेजकर इनके ठहरने का उचित प्रबंध करवा दीजिए।"

वीरनारायण के मुंह से ये शब्द निकलते ही मगर-मच्छ की आकृतिवाला उसकी ओर क्रोध भरी दृष्टि दौड़ाकर बोला– "अरे, तुमने अपना क्या नाम बताया? वीरनारायण?" फिर उसकी गर्दन पकड़कर ऊपर उठाकर बोला–"मैंने पीड़ा के कारण जो शब्द कहे, उनसे तुम समझ गये होगे कि मैं कौन हूं? मगर यह बात तुम अपने मुखिये या किसी और से बता दोगे तो तुम्हारी गर्दन तोड़ दूंगा! समझे!"

वीरनारायण थर-थर कांपते हुए बोला– "हुजूर! मुझको मत मारिये! मेरे राजा और आप ओहदे में बराबर हैं। मैं तो एक साधारण देहात का वैद्य ठहरा। मैं आप के मामलों में दखल क्यों दूं? आप थोड़ा दांत मींचकर दर्द को सहने की कोशिश कीजिएगा! मैं अभी तलवार निकालने जा रहा हूं।"

ये बातें सुन मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने वीरनारायण की गर्दन को ढीला कर दिया। इस पर वीरनारायण ने तलवार को धीरे से इधर-उधर हिलाकर देखा, दोनों हाथों से तलवार को कसकर खींचने को हुआ, तभी उसे चरकाचारी की यह चिल्लाहट सुनाई दी–"बचाओ, बचाओ, मर गया!" तभी दो-तीन हाथी एक साथ दूर से घींकार कर उठे।

हाथियों का चिघाड़ तथा चरकाचारी की चिल्लाहट सुनकर मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने झट उस दिशा में अपनी गर्दन घुमाई। उसे लगा कि चरकाचारी की चिल्लाहट का कारण जंगली हाथियों का खतरा नहीं, क्यों कि उन हाथियों का चिघाड़ दूर से सुनाई दे रहा था। फिर चरकाचारी तो और किसी खतरे की आशंका से चिल्ला रहा था।

इस बीच सारे गांववाले भय कंपित हो उठे। उन्हें शेर और बाघों की अपेक्षा जंगली हाथियों का डर अधिक था। क्योंकि

वे जानते हैं कि अकस्मात गाँवों पर हमला करके ये जंगली हाथी घरों को तहस-नहस कर डालते हैं।

गाँव का मुखिया विकृत आकृतिवाले के निकट जाकर बोला–"हुजूर! चरकाचारी एक बार चिल्लाकर चुप रह गया। इसका मतलब है कि वह किसी खतरे में फंस गया है। इसलिए जंगली हाथियों का झुंड हम पर हमला करने के पहले ही हम लोग गाँव पहुँच जायेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।"

"तुम्हारी सलाह तो अच्छी है, मगर मेरे इलाज की बात क्या होगी? मैं और कितने दिन इस टूटी तलवार को बगल में ही रखे रहूँ?" मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने कहा।

वीरनारायण हाथियों के चिंघाड़वाली दिशा की ओर देख थर थर कांपते हुए बोला–"हुजूर! हमारे मुखिये का कहना उचित मालूम होता है!"

विकृत आकृतिवाला यह सोचकर सहम गया कि वह किसी खतरे में फँसने जा रहा है, इससे बचने का उपाय सोच ही जा रहा था, तभी चरकाचारी की चिल्लाहट फिर सुनाई दी–"मुझे बचाइए, मुझे बचाइए!" उसी वक्त जंगली हाथी झाड़ियों को रौंदते पेड़ों की डालों को तोड़ते तेजी के साथ दौड़ते आने लगे।

इस दृश्य को देख गाँव का मुखिया अपनी लोहे की टोपवाली छड़ी को उठाकर अपने गाँववालों से बोला–"सुनो, हम लोग अब थोड़ा भी विलंब करेंगे, तो जान से हाथ धो बैठेंगे। तुम लोग गाँव की ओर भाग जाओ!"

सारे गाँववाले गाँव की ओर दौड़ पड़े, मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने झट से अपने शिरस्त्राण को पहन लिया, हाथी को ललकारकर लंबे त्रिशूल को हाथ में लिया। इस पर वीरनारायण हाथी पर उछलते चरकाचारी से भी ऊँची आवाज में चिल्ला उठा–"बाप रे बाप! मुझे बचाइए! मुझे बचाइए! मैं मर जाऊंगा।"

(और है)

नागमणि

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, भले ही आप का प्रयत्न सफल हो, लेकिन उसके द्वारा कोई प्रयोजन संभवतः न हो सकेगा! इसके उदाहरण स्वरूप में आप को विजयवर्मा नामक एक राजा की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में कलिंग राज्य पर विजयवर्मा शासन करता था। युक्त वयस्क होने पर विजयवर्मा का राज्याभिषेक हुआ। इसके थोड़े दिन बाद विजयवर्मा ने सुनंदिनी नामक एक सुयोग्य राज कन्या के साथ विवाह किया।

कुछ ही वर्षों में सुनंदिनी एक विचित्र बीमारी का शिकार हो गयी और वह

वेताल कथाएँ

क्रमशः दुर्बल होती गई। राज वैद्य ने जांच करके बताया कि रानी की बीमारी मानसिक नहीं, शारीरिक ही है। परंतु उसका कोई सही इलाज नहीं है। यदि कहीं नागमणि प्राप्त हो जाय तो उसके द्वारा बीमारी को बड़ी आसानी से दूर किया जा सकता है। कहा गया कि जो नाग सौ वर्ष तक किसी मानव की दृष्टि में न पड़ा हो, उसी के सर पर यह मणि उग सकता है। ऐसा एक सर्प विंद्याचल के जंगलों की पूर्वी दिशा में है।

रानी की बीमारी से चिंतित विजयवर्मा शासन का भार अपने मंत्रियों पर छोड़कर नागमणि को लाने के लिए अपने घोड़े पर सवार हो चल पड़ा। अनेक कष्टों का सामना करते हुए आखिर वह विन्ध्याचल के जंगलों में पहुँचा। उस जंगल की पूर्वी दिशा में जब विजयवर्मा बढ़ रहा था, तब एक दिन रात को थोड़ी दूर पर उसे चांदनी जैसी रोशनी दिखाई दी। विजयवर्मा ने सोचा कि वह जरूर नागमणि का ही प्रकाश होगा, उस दिशा में बढ़ा, तो थोड़ी ही दूर पर एक बांबी तथा एक बड़े नाग को देखा। नाग के सर पर एक मणि चमक रहा था।

सर्प को मारने पर ही मणि निकाला जा सकता था। इसलिए विजयवर्मा समीप के एक पेड़ पर चढ़ गया और अपने धनुष पर तीर चढ़ाया। मगर उसने तीर नहीं छोड़ा। उसके मन में यह ख्याल आया कि पहले बाण से अगर सांप न मरा तो सांप भाग सकता है, या वहीं पर छिपे रहकर उसके पेड़ से उतरते ही उसे डस सकता है। अलावा इसके सांप के फण फैलाने पर ही उसका निशाना ठीक बैठ सकता है।

यह विचार करके विजयवर्मा ने अपना तीर सांप के सर के ऊपर में स्थित एक छोटी डाल पर छोड़ा। डाल टूटकर सांप पर गिर गई, जिससे सांप ने क्रोध में आकर अपना फण फैलाया और फुत्कारने

लगा। विजयवर्मा ने मौक़ा देख दूसरा तीर साँप पर चलाया।

साँप मर गया। विजयवर्मा पेड़ से उतर आया। साँप के सिर से मणि निकाला। वह मणि लेकर जंगल से होकर जा रहा था। तब तक सवेरा हो गया और लोगों का कोलाहल उसे सुनाई दिया। उसने सोचा कि वे लोग जंगली डाकू होंगे और वे लोग उसी की ओर चले आ रहे हैं। उसने नागमणि को निकट की झाड़ी में छिपा दिया।

इसके थोड़ी देर बाद चन्द जंगली लोगों ने आकर उसे घेर लिया। लाचार होकर वह उनके हाथों में बन्दी हो गया। उन लोगों ने विजयवर्मा के हथियार खींच लिये, उसके हाथ बाँधकर अपने गाँव ले गये। उनकी बातों से विजयवर्मा ने समझ लिया कि वे लोग उसे अपनी देवी की बलि देने जा रहे हैं। अब उसके सामने यही समस्या थी कि इस खतरे से वह अपने को कैसे बचाये?

जंगली लोगों के नेता के चित्रलेखा नामक एक कन्या थी। वह बड़ी सुंदर थी। उसने विजयवर्मा को देखते ही उसे मोह लिया और अपने पिता से कहा— "पिताजी! आप उस राजकुमार को देवी की बलि नहीं दे सकते! मैं उसके साथ विवाह करना चाहती हूँ। यदि आप मेरी इच्छा की पूर्ति करना नहीं चाहते तो कृपया मेरी भी बलि दीजिए!"

"बेटी, यदि कोई नागरिक हमें मिल जाता है तो उसे देवी की बलि देने का हमारा नियम है! उस नियम का हम कैसे उल्लंघन करें। तब तो एक काम करूंगा, मैं उस युवक के साथ द्वन्द्व युद्ध करूँगा, यदि वह विजयी होता है तो उसे वीर मानकर मुक्त करूंगा। तब तुम संभव हो तो उसके साथ विवाह कर सकती हो।" चित्रलेखा के पिता ने कहा।

विजयवर्मा और जंगली नेता के बीच द्वन्द्व युद्ध हुआ। यह कहा नहीं जा सकता कि चित्रलेखा का पिता सचमुच हार गया या जान बूझकर, पर उस युद्ध में विजयवर्मा विजयी हुआ।

तब चित्रलेखा विजयवर्मा के सामने आई। उसका सौंदर्य देख विजयवर्मा मुग्ध हो गया। उसने स्वयं चित्रलेखा के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की। इसके बाद उसने सारा वृत्तांत सुनाया और अपने नगर को लौटते हुए चित्रलेखा के पिता से पूछा कि उसके साथ वह चित्रलेखा को भी भेज दे।

"हम लोग अनेक वर्षों से नागमणि को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमने सुना है कि वह तुम्हें मिल गया है। इसलिए उसे मुझे देकर तुम चित्रलेखा को अपने साथ ले जाओ।" जंगली जाति के नेता ने कहा।

चित्रलेखा ने भी बताया कि नागमणि उसके पिता के हाथ सौंप दे तो वह विजयवर्मा के साथ चलने को तैयार है।

विजयवर्मा थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला—"चित्रलेखा, मैं किसी भी हालत में नागमणि नहीं दे सकता। तुम अगर केवल मणि के वास्ते मेरे साथ विवाह करने को तैयार हो तो मैं लाचार हूँ कि मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा सकता।" ये शब्द कहकर विजयवर्मा तेजी के साथ चलने को तैयार हो गया।

इस पर चित्रलेखा के पिता ने उसे रोककर कहा—"राजन, सचमुच नागमणि

की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। अगर तुमने नागमणि मुझे दिया होता तो किसी भी हालत में तुम्हें चित्रलेखा न मिलती। तुम्हारी परीक्षा हो गई, अब तुम मेरी कन्या को अपने साथ ले जा सकते हो।"

विजयवर्मा नागमणि के साथ चित्रलेखा को भी लेकर वहाँ से चला गया। उस मणि की मदद से उसने सुनंदिनी का स्वास्थ्यलाभ करवाया और दोनों पत्नियों के साथ सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा— "राजन, विजयवर्मा ने वह मणि देने से क्यों इनकार किया? क्या उसके मन में सुनंदिनी के प्रति जो प्यार था, वह चित्रलेखा के प्रति न था? या इसका तात्पर्य क्या है कि जंगली जाति के नेता ने पहले जो यह शर्त रखी कि मणि देकर ही विजयवर्मा चित्रलेखा को ले जा सकता है, फिर उसने अपना विचार क्यों बदल लिया? यह क्यों कहा कि विजयवर्मा ने अगर मणि दिया होता तो वह चित्रलेखा से भी हाथ धो बैठा होता? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया— "विजयवर्मा चित्रलेखा के वास्ते अपना सारा श्रम व्यर्थ बनानेवाला चपल चित्त नहीं है। चित्रलेखा के सौंदर्य पर मोहित होने मात्र से वह सुनंदिनी के हित को भुलानेवाला भी नहीं है। अब चित्रलेखा के पिता की बात रही। यही कहना होगा कि उसने विजयवर्मा की परीक्षा ली है, जो अपनी पहली पत्नी के प्रति उपेक्षा दिखानेवाला है, वह बाद को एक और पत्नी के वास्ते चित्रलेखा को भी त्याग सकता है। विजयवर्मा ने यदि जंगली नेता की शर्त मानकर उसे मणि दिया होता उसने चित्रलेखा को विजयवर्मा के साथ भेजने में इनकार किया होता।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित.)

दो पत्नियाँ

कई शताब्दियों के पहले की बात है।

एक राजा के मालिनी और मंजरी नामक दो पत्नियाँ थीं। दोनों अपूर्व रूपवतियाँ थीं। राजा दोनों के साथ समान रूप से प्यार करता था। दोनों में से यदि कोई भी रूठ जाती तो राजा को बड़ा दुख होता। लेकिन उन दोनों के बीच सदा वैमनस्य बना रहता था। इसलिए उन दोनों में से कोई एक किसी कारण से रूठ जाती थीं। राजा उन्हें मनाने में परेशान हो जाता था।

आखिर इन समस्याओं को सुलझाने के लिए राजा ने ऊँची तनख्वाह पर नरहरि नामक एक अंतरंग सलाहकार को नियुक्त कर लिया।

नरहरि बड़ा चमत्कारवाले स्वभाव का था, और बड़ी अच्छी समय स्फूर्ति रखता था। रानियाँ जब भी अकारण रूठ जातीं तो अपनी चातुरी के द्वारा उनके क्रोध को शांत करके राजा को मानसिक शांति प्रदान करने का प्रयत्न करना नरहरि का काम था। नरहरि की नियुक्त के बाद सचमुच राजा को मानसिक शांति मिलने लगी थी। रानियों के क्रोध को शांत करने में नरहरि ने बड़ी दक्षता दिखाई।

उन्हीं दिनों में एक प्रसिद्ध चित्रकार उस राज्य में आया। वह अंतःपुर की सुंदर नारियों के चित्र ही बनाता था। इसलिए मालिनी और मंजरी ने भी अपने-अपने चित्र उस चित्रकार के द्वारा बनवाये, चित्रकार ने अपनी सारी कुशलता का परिचय दे उनके चित्रों को सजीव बनाया।

दोनों रानियों ने अपने-अपने चित्र राजा को दिखाये। राजा ने मंजरी का चित्र देखा, उसे चुपचाप एक ओर अलग रख दिया, फिर मालिनी का चित्र देखा।

नागेश्वर द्विवेदी

उसके मुंह से अनायास निकल पड़ा–"ओह! अद्‌भुत है! अद्‌भुत!"

फिर क्या था, मंजरी का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। वह अपने चित्र को वहीं पर छोड़ बरस पड़ी–"मालिनी ने मुझ से पहले चित्र बनवाया, इसके बाद मेरा चित्र बनाते वक़्त चित्रकार थक गया होगा। बस, इसी वजह से मेरे सौंदर्य का आप अपमान करते हैं?" यों कहकर वह अपने कक्ष में चली गई। राजा ने अनेक प्रकार से समझाने की कोशिश की, पर उसने एक न सुनी।

राजा ने चित्रकार को भेज दिया। नरहरि को खबर भेजकर वह अपना सिर पकड़े बैठ गया।

नरहरि के प्रवेश करते ही राजा की जान में जान आ गई। राजा ने नरहरि को सारा वृत्तांत सुनाया और कहा–"अब तुम जानो, रानी को तुम कैसे मनवाओगे?"

नरहरि मुस्कुराकर बोला–"महाराज! आप बिलकुल चिंता न करें। मैं कुछ ही क्षणों में रानीजी को प्रसन्न बनाऊँगा।" ये शब्द कहकर रानी का चित्र ले वह उनके कक्ष में चला गया।

मंजरी क्रोध के मारे अपने कक्ष में टहल रही थी।

"महारानीजी! आप अपने इस चित्र को लेने से भूलकर चली आई हैं।" इन शब्दों के साथ नरहरि वह चित्र महारानी को देने को हुआ।

"उसे फेंक दो! मैंने जिस चित्र को फेंक दिया था, उसे तुम क्यों ले आये हो? जानते हो, इस चित्र के कारण आज मेरे सौंदर्य का कैसा अपमान हो गया है।" मंजरी ने कड़ककर कहा।

नरहरि ने आश्चर्य का अभिनय करते हुए कहा-"महारानीजी! आप यह क्या कह रही हैं? मैं जब वहाँ पहुँचा, देखा, महाराजा आप ही के सौंदर्य की प्रशंसा कर रहे थे।"

"झूठ बोलकर तुम मुझे भुलावा नहीं दे सकते! राजा ने एक बार मेरे चित्र को देख अलग रखा, फिर मालिनी के सौंदर्य की तारीफ करते थकते न थे।" मंजरी ने अपना क्रोध उतारा।

नरहरि ठहाके मारकर हँस पड़ा और बोला-"महारानीजी! इस पर तो रानी मालिनी देवी को क्रोधित होना चाहिए था, आप किसलिए नाराज होती हैं? चाहे आप का चित्र जितना भी सुंदर हो, आप को रोज देखनेवाले यह कहे कि वह चित्र अच्छा नहीं है, तो इसका मतलब है कि आप का पूरा सौंदर्य उस चित्र में उतरा नहीं है। राजा को लगा कि मालिनी देवी की अपेक्षा उनका चित्र सुंदर है। इसका मतलब है कि महाराजा का मालिनी देवी के चित्र की प्रशंसा करना उनके सौंदर्य का अपमान करना ही है।"

ये शब्द सुनने पर मंजरी का चेहरा खिल उठा। उसने झट से अपने कंठ का हार निकालकर नरहरि के हाथ में रखा, तब कहा-"मैंने यह बात नहीं सोची! तुम इस हार को ले जाकर अपनी पत्नी को दो।"

"महारानीजी! मैं एक और हार खरीदने की शक्ति नहीं रखता। मेरे कोई अंतरंग सलाहकार भी नहीं है। नाराज होने पर उन्हें शांत करना भी मुझसे संभव नहीं है। मेरे भी दो पत्नियाँ हैं-दोनों एक से एक बढ़कर!" ये शब्द कहते नरहरि उस हार को लिये बिना वहाँ से चला गया।
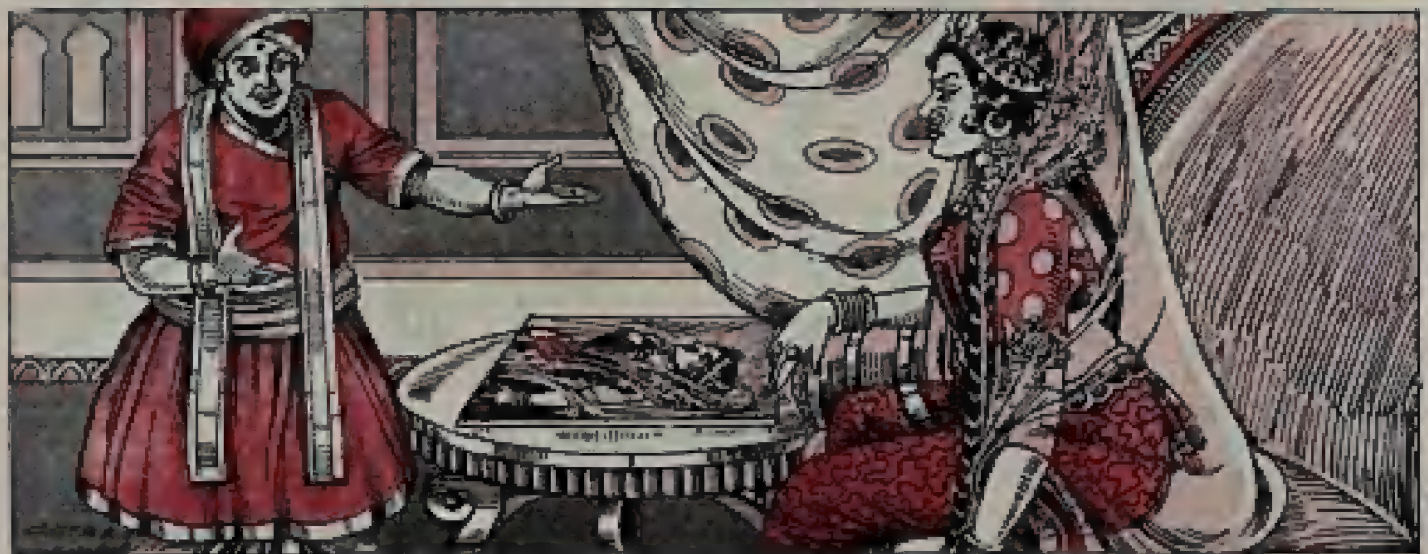
पिता का पुत्र

एक बार यमराज को अपने अकेलेपन और नरक के वातावरण पर खीझ उत्पन्न हुई। वे एक बार पृथ्वी लोक में आये। वसंत कालीन शोभा के साथ प्रकृति अत्यंत रमणीय थी। चारों ओर सूरज की रोशनी फैली थी। यमराज को पृथ्वी लोक अत्यंत आनंदमय प्रतीत हुआ।

यमराज पृथ्वी का संचार कर रहे थे, उन्हें एक स्थान पर एक सुंदर युवती दिखाई दी। वह एक पुरुष के साथ झगड़ा कर रही थी। पुरुष उस युवती को समझा न पाया, आखिर तंग आकर भाग गया। उस नारी की सुंदरता और साहस पर मुग्ध हो यमराज ने उसके साथ विवाह करना चाहा।

अब उनके सामने समस्या यह थी कि क्या किया जाय? अगर वे अपने दूतों को भेज देते हैं तो वे उस युवती को प्राणों के साथ नहीं ला सकेंगे। अलावा इसके यमराज का उद्देश्य था कि थोड़े समय तक उस युवती के साथ गृहस्थी चलाते हुए पृथ्वी लोक में ही रह जायें। इसलिए उन्होंने एक सुंदर युवक का रूप धरकर उस युवती के सामने अपना विचार रखा। युवती ने यमराज के साथ विवाह करने की सम्मति दी। दोनों ने अनेक दिन तक प्रेम पूर्वक गृहस्थी चलाई। एक वर्ष बाद उन्हें एक लड़का पैदा हुआ।

पुत्र के पैदा होने के बाद यमराज की पत्नी उस बच्चे की देखभाल में लीन हो गई। धीरे-धीरे उसके मन में पति के प्रति अनुराग कम होता गया। वह बराबर अनेक चीजों की माँग करते हुए अपने पति को तंग करने लगी। यमराज भी बड़ी सहनशीलता के साथ अपनी पत्नी की सारी इच्छाओं को पूरा करते हुए उसे खुश रखने

विनोदशंकर वर्मा

का प्रयत्न करने लगे। मगर वह संतुष्ट न हो पाती थी। वह अपने पति में कोई न कोई ऐब ढूंढ़ते उनके प्रति लापरवाही दिखाने लगी।

वह हमेशा यही शिकायत करती रहती कि दिन प्रति दिन खर्च बढ़ते जा रहे हैं और उसके पति कुछ कमाते नहीं, इससे तंग आकर यमराज ने कुछ दवाइयाँ तैयार करना शुरू किया। शीघ्र ही वह एक अच्छे वैद्य के रूप में प्रसिद्ध हो गये। उनकी आमदनी भी बढ़ती गई।

लेकिन यमराज की पत्नी की मानसिक दशा दुर्भर होती गई। यमराज अपनी पत्नी से यहाँ तक परेशान हुए कि आखिर उसका कंठ स्वर सुनाई देता तो वे उठकर कहीं चल देते थे। अकस्मात उनके मन में यह विचार आया कि ऐसी पत्नी के साथ गृहस्थी चलाने की अपेक्षा उनका अंधकार पूर्ण लोक नरक कूप ही कहीं उत्तम है। फिर क्या था, इसके दूसरे मिनट ही वे अंतर्धान हो अपने लोक में चले गये।

इधर पृथ्वीलोक में यमराज की पत्नी अपने पति के वास्ते जरा भी चिंतित नहीं हुई। वह अपने पुत्र की देखभाल करते बड़ी सुखी थी। उसके लाड़-प्यार से लड़का आवारा निकला। इसके थोड़े दिन बाद यमराज की पत्नी का देहांत हो गया।

यमकुमार अकेला बच रहा। उसकी समझ में न आया कि वह अपने दिन कैसे काटे? उसे अपने पिता का पेशा याद हो आया। वह उन्हीं दवाओं के आधार पर लोगों का इलाज करने लगा।

एक दिन रात को यमकुमार को उसके पिता ने सपने में दर्शन देकर कहा—"बेटा, तुम वैद्य का पेशा चालू रखो, तुम्हारा भला होगा। लेकिन एक बात याद रखो, जब भी तुम किसी मरीज को देखने जाओगे, तब तुम उसके सिर की ओर देखो। उसके मस्तक पर अगर मैं तुम्हें दिखाई दिया तो तुम उस मरीज का इलाज मत करो। क्योंकि वह मरीज जरूर मर

जाएगा। यदि मैं दिखाई न दिया तो उस मरीज़ का तुम इलाज करो। तुम जो भी दवा दोगे, मरीज़ चंगा हो जाएगा।"

नींद से जागने पर ही यमकुमार को पता चला कि उसने जो कुछ देखा, वह सपना था। फिर भी उसने उस सपने पर विश्वास करके उसी प्रकार इलाज करने का निश्चय किया। शीघ्र ही उसका नाम चारों ओर फैल गया। यदि वह इलाज करने का निश्चय करता तो वह मरीज़ ज़रूर ज़िंदा रहता। वह जिस मरीज़ का इलाज करने से मना करता, वह मरीज़ अवश्य मर जाता। इस कारण जनता में उसके इलाज के प्रति अपार श्रद्धा पैदा हुई।

उन्हीं दिनों में उस देश की राजकुमारी सख्त बीमार पड़ी। अनेक वैद्यों ने उसका इलाज किया, मगर कोई फ़ायदा न रहा। वैद्यों ने साफ़ कह दिया कि उसका ज़िंदा रहना मुश्किल है। इस पर राजा और रानी दुख में डूब गये।

उसी समय किसी ने राजा को यमकुमार के इलाज की बात बताई। राजा ने अपने नौकरों को भेजकर यमकुमार को बुला भेजा। यमकुमार ने राजकुमारी के निकट पहुँचकर अपनी आदत के अनुसार उसके मस्तक की ओर देखा। उसे राजकुमारी के मस्तक पर यमराज दिखाई दिये।

यमकुमार चौंक पड़ा। उसने मरीज़ के कमरे से सब लोगों को बाहर भेजा, तब अपने पिता से कहा—"पिताजी, मैं अगर इस राजकुमारी को ज़िंदा कर सकूँगा तो अपार यश के साथ मुझे बहुत सारा धन भी मिल जाएगा। कृपया आप इस राजकुमारी को छोड़कर चले जाइए।"

"बेटा, तुम चाहे जो भी वर माँग लो, लेकिन तुम्हारी इस इच्छा की पूर्ति करना मेरे लिए संभव नहीं। मुझे राजकुमारी को अपने साथ अवश्य ले जाना होगा। इसके ललाट की लिपि को मैं ही क्या कोई भी बदल नहीं सकते।" यमराज ने उत्तर दिया।

यमकुमार ने अपने पिता से अनेक प्रकार से मिन्नत की, मगर कोई नतीजा नहीं निकला। आखिर यमराज अपने पुत्र पर रहम खाकर बोले-"बेटा, मैं तुम्हें तीन दिन की मोहलत देता हूं। इस बीच तुम किसी न किसी रूप में यहां से हट जाओ।" यों सलाह देकर यमराज गायब हो गये।

इसके बाद यमकुमार ने राजा से कहा-"महाराज, यह एक भयंकर बीमारी है। आप मुझे तीन दिन की मोहलत दीजिए।"

यमकुमार ने दिन-रात राजकुमारी के यहां ही रहकर तीन दिन तक इलाज किया। उसने जान लिया कि अब उसके बस की बात नहीं है, इसलिए वह अपने पिता का इंतजार करने लगा। लेकिन उस हालत में भी उसका दिमाग बराबर काम करता रहा। वह सोच ही रहा था कि अपने पिता के चंगुल से राजकुमारी की रक्षा कैसे की जाय?

तीन दिन की मोहलत के समाप्त होते ही यमराज उसे दिखाई दिये। यमराज के मुखमण्डल पर भी यह व्यथा दिखाई दी कि वह चाहते हुए भी अपने पुत्र की मदद नहीं कर पा रहे हैं।

मगर अपने पिता को देखते ही यमकुमार के दिमाग में बिजली की कौंध जैसी एक बात सूझ पड़ी। उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर उच्च स्वर में कहा-"मां! तुमने इतनी देरी क्यों कर दी? जल्दी आ जाओ, पिताजी आये हुए हैं।"

फिर क्या था, दूसरे ही क्षण यमराज गायब हुए और अपने लोक में चले गये।

इसके दूसरे ही क्षण राजकुमारी आंखें खोल देखने लगी। यमकुमार ने समझ लिया कि अब राजकुमारी को जान का डर नहीं है, उसने राजदंपति को साहस बँधवाया और अपना इलाज करके राजकुमारी को चंगा कर दिया। राजदंपति परमानंदित हुए और अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के हेतु उन लोगों ने राजकुमारी का विवाह यमकुमार के साथ वैभव पूर्वक संपन्न किया।

१७५. हिटाइट देवता

सिरिया के यूफ्राटिस नदी के तट पर हिटाइट सभ्यता का विस्तार हुआ और ई. पू. ७ वी शती में उसका अंत हुआ। खुदाई में कार्केमिस नामक स्थान पर इस हिटाइट देवता की मूर्ति प्रकट हुई है।

मंत्री की युक्ति

महाराजा सोमशेखर के अधीन कई देश थे, जिन पर उनके सामंत शासन किया करते थे। राजा सोमशेखर शासन-कार्य में बड़े ही कुशल थे। उनका विचार था कि उनके सामंत भी उन्हीं की भाँति समर्थतापूर्वक अपने देशों पर शासन करें। इसलिए जब-तब राजा सोमशेखर अपने सामंतों के देशों में चले जाते, वहाँ के शासन कार्य का स्वयं निरीक्षण करते, यदि कोई सामंत उन्हें असमर्थ और अयोग्य मालूम होता तो उसे हटाकर उसकी जगह तुरंत किसी योग्य व्यक्ति को नियुक्त कर देते थे।

एक बार राजा सोमशेखर मणिपुर राज्य देखने गये। मणिपुर का राजा वैसे कोई असाधारण प्रतिभाशाली न था। मगर उसका मंत्री सुमंत बड़ा ही मेधावी था। दुर्भाग्य की बात यह थी कि जिस समय राजा सोमशेखर मणिपुर का भ्रमण करने निकले, उस वक्त मणिपुर राज्य की हालत खास अच्छी न थी। राजा सोमशेखर तथा उसके परिवार के लिए मंत्री सुमंत ने अत्यंत अद्‌भुत आतिथ्य एवं मनोरंजन का प्रबंध किया। मंत्री का विचार था कि ऐसा करने पर मणिपुर राज्य की त्रुटियाँ राजा सोमशेखर की दृष्टि में न आयेंगी।

मंत्री की कल्पना के अनुसार राजा सोमशेखर बढ़िया आतिथ्य देख अत्यंत प्रसन्न हुए। लेकिन आखिर में मणिपुर राज्य के राजा चंद्रवर्मा के भोलेपन की वजह से एक भूल होकर ही रही। राजा सोमशेखर जिस दिन मणिपुर में पहुँचे, उस दिन की रात को दावत व मनोरंजन के बाद सोमशेखर के साथ राजा चन्द्रवर्मा ने शतरंज खेलकर उसम

दयानंद ठाकुर

सोमशेखर को बुरी तरह से हराया। इस पर सोमशेखर का चेहरा एक दम पीला पड़ गया। इसे देख मंत्री सुमंत का कलेजा काँप उठा। अपने सम्राट को विजयी होने देना चाहिए, इस साधारण ज्ञान के अभाव में राजा चन्द्रवर्मा अपनी गद्दी खो सकता है, इस खतरे को टालने के लिए मंत्री सुमंत ने अत्यंत गंभीरता पूर्वक सोचा।

दूसरे दिन मणिपुर के दरबार में सोमशेखर अग्रस्थान पर बैठे हुए थे और सामंत राजा चन्द्रवर्मा उनके समीप में एक और आसन पर बैठे अपने प्रधान राज कर्मचारियों का परिचय सोमशेखर को करा रहे थे। सोमशेखर के सवालों का जवाब वे लोग बड़ी सूझ-बूझ और विनय पूर्वक दे रहे थे।

उस वक़्त दरबार में एक युवक ने प्रवेश करके कहा–"महाराज! मैं शतरंज खेलने में कुशल हूँ, मैं विदर्भ देश का निवासी हूँ। मैं सभी देशों में भ्रमण किया करता हूँ। आज तक किसी ने मुझे शतरंज के खेल में नहीं हराया है। आप का आदेश हो तो मैं आप के सामने अपनी निपुणता का परिचय दे सकता हूँ।"

महाराजा सोमशेखर ने उस युवक को अनुमति दी। इस पर दरबार के जो भी

शतरंज के निपुण खिलाड़ी थे, एक एक करके आगे आये, उस युवक के साथ शतरंज खेलकर उस में हार गये। इस पर वह युवक दर्प पूर्ण स्वर में बोला– "इसका मतलब है कि इस देश में भी मुझे हरानेवाले कोई नहीं हैं। मैं क्या कर सकता हूँ? मैं अपने देश को लौट जाता हूँ।"

"हमारे राजा चन्द्रवर्मा शतरंज खेलने में बड़े ही निपुण हैं। उनके साथ खेलो। तुम जरूर हार जाओगे। उनको हरानेवाले आज तक कोई नहीं हैं।" मंत्री सुमंत ने युवक से कहा।

युवक ने राजा चन्द्रवर्मा के साथ तीन खेल खेलकर तीनों में राजा को हरा दिया।

दरबारी लोग आश्चर्य में आ गये। सर्वत्र सन्नाटा छा गया।

"अब मुझे शतरंज में हरानेवाले कोई इस दरबार में नहीं हैं न?" युवक ने दर्प के साथ कहा।

"सुनो, तुम जल्दबाजी न करो। तुम अपनी कुशलता महाराजा सोमशेखर पर प्रकट करके दिखाओ तो सही।" मंत्री सुमंत ने कहा।

महाराजा सोमशेखर को विवश होकर उस युवक के साथ शतरंज खेलना पड़ा। प्रथम खेल के प्रारंभ होते ही कुछ ही क्षणों में युवक हार गया। युवक का चेहरा पीला पड़ गया। उसने महाराजा सोमशेखर के साथ एक और खेल खेलने की प्रार्थना की। इस बार भी वह युवक चन्द पलों में ही हार गया।

युवक ने महाराजा सोमशेखर की तारीफ़ करते हुए कहा–"मैंने आज तक महाराजा जैसे शतरंज के खिलाड़ी को कहीं नहीं देखा है। मैंने आप के सामने जो दर्प दिखाया, इसके लिए कृपया आप मुझे क्षमा करें।" यों महाराजा से अनुमति लेकर अपना मस्तक झुकाये वह युवक दरबार से चला गया।

इस पर महाराजा सोमशेखर के चेहरे पर विजय का गर्व झलक उठा। मंत्री की प्रसन्नता की सीमा न रही।

मंत्री सुमंत ने मन ही मन कहा–'भगवान, अब हम संकट से बच गये!'

उस दिन रात को जब मंत्री सुमंत घर लौटा तो उसके भानजे ने पूछा–"मामाजी, मैं आज तक शतरंज में किसी के हाथ नहीं हारा, मुझे महाराजा के हाथों में हारने को क्यों बताया?"

"बेटा! तुमने मेरे राजा की गद्दी को बचाया। कल ही महाराजा सोमशेखर यहाँ से चले जा रहे हैं। मैं कह नहीं सकता कि वे कितने प्रसन्न हैं!" इन शब्दों के साथ मंत्री सुमंत ने अपने भानजे को सारा वृत्तांत सुनाया।

गरीब कौन है?

एक गाँव में मरीज़ों के इलाज का कोई प्रबंध न था, इसलिए वहाँ के लोग बहुत ही परेशान थे। एक बार उस गाँव में एक सन्यासी आया। गाँव के लोगों की हालत पर उसे दया आई। उसने एक अस्पताल बनवाया। गरीबों की मदद करने के ख़्याल से उस अस्पताल में सन्यासी ने अपने शिष्यों को नियुक्त किया और मुफ़्त इलाज का प्रबंध करके वह चला गया।

वह अस्पताल उस गाँव के मरीज़ों के साथ आसपास के गाँवों के मरीज़ों के लिए भी लाभदायक सिद्ध हुआ। धनी लोग भी उस अस्पताल में मुफ़्त में इलाज कराने के लिए आने लगे। थोड़े दिन बाद सन्यासी उस गाँव में आया। शिष्यों ने सारी हालत बताकर उनकी सलाह माँगी कि धनी लोग भी मुफ़्त में इलाज करा रहे हैं, क्या किया जाय?

इस पर सन्यासी ने हँसकर कहा–"हमारा उद्देश्य है कि यह अस्पताल गरीबों के लिए लाभदायक हो! यह बात जानकर भी यदि धनी लोग इलाज कराने आते हैं तो हम क्या कर सकते हैं? उनका इलाज हमें करना ही होगा। याचना करनेवाला चाहे कोई भी हो, वह गरीब ही होता है।"

देवी का वरदान

एक गांव में रामशास्त्री नामक एक जमींदार था। साधारणतः ब्राह्मण जमींदार नहीं होते। रामशास्त्री के पुरखों में एक व्यक्ति महान पंडित था। राजा ने उसके पांडित्य पर प्रसन्न होकर उसे कई गांव इनाम में दे दिये। तब से उस ब्राह्मण परिवार के लोग जमींदार बन गये।

रामशास्त्री सनातन धर्म का पक्षपाती था। अपने घर में प्रति दिन वह बड़ी भक्ति और श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना किया करता था।

रामशास्त्री के दो पुत्र थे; उनमें बड़े पुत्र का नाम सुग्रीव शास्त्री था जो बीस साल का युवक था। अपने पिता के बाद जमींदार बनने का हक़ उसी को था। रामशास्त्री ने उसे बचपन में ही शिक्षा प्राप्त करने के लिए काशी तथा मथुरा के बड़े-बड़े पंडितों के पास भेज दिया। सुग्रीव शास्त्री ने बड़ी लगन के साथ शिक्षा प्राप्त की और शास्त्रों का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। अनेक नये प्रदेशों में जाकर शास्त्रार्थ किया, समाज सुधारकों के साथ बहस करके धर्म के प्रति उसने अपना एक नया दृष्टिकोण बनाया। धर्म के नियमानुसार जैसे मनुष्य अपने जन्म के वंश के अनुसार उच्च-नीच जाति का कहलाता है, इन धार्मिक सूत्रों का वह प्रबल विरोधी बन बैठा।

इस प्रकार के प्रगतिशील विचार लेकर सुग्रीव शास्त्री घर लौटा। उसने सर्व प्रथम अपने घर के पुरोहित के पुत्र गुणभट्ट को अपने विचारों के अनुकूल बनाया। गुणभट्ट भी सुग्रीव शास्त्री का सम वयस्क था। इसके थोड़े दिन बाद गांव के कुछ और युवक सुग्रीव शास्त्री के विचारों के समर्थक बने। ये सब लोग रात के वक़्त राम शास्त्री की

ए. सी. सरकार, जादूगर

आँख बचाकर गुप्त रूप से अछूतों की बस्ती में चले जाते, मरीजों के इलाज का प्रबंध करते, भूखे लोगों के लिए चावल का इंतजाम कर देते थे।

गरमी के दिन थे। दुपहर के वक़्त सुग्रीव शास्त्री पड़ोसी गाँव से अपने घर लौट रहा था। उसने सड़क के किनारे एक बरगद के नीचे जूते सीनेवाले रूपराम को देखा। सुग्रीव शास्त्री पहले ही उसे जानता था। इसलिए उसने रूपराम के निकट जाकर कुशल प्रश्न पूछे—"रूपराम! क्या हाल है? बाल-बच्चे सब कुशल हैं न?"

रूपराम ने सुग्रीव शास्त्री को प्रणाम करके कहा—"सरकार! आप की कृपा से हम सब कुशल हैं। आप इस कड़ी धूप में कैसे निकल पड़े? थोड़ी देर आराम कीजिए! आप को प्यास तो नहीं लगी?"

इसके बाद सुग्रीव शास्त्री रूपराम की बगल में स्थित लकड़ी के एक बक्से पर जा बैठा। सुग्रीव शास्त्री प्यास के मारे बेहाल था। रूपराम ने एक मिट्टी के बर्तन से एक तांबे के गिलास में पानी डालकर सुग्रीव शास्त्री के हाथ दिया। सुग्रीव शास्त्री गिलास को अपने हाथ में ले पानी पी रहा था, तभी उधर से एक घोड़ा गाड़ी आ निकली। गाड़ी में जमीन्दार राम शास्त्री बैठा हुआ था। वह किसी जरूरी काम से पड़ोसी गाँव में जा रहा था। अपने बड़े पुत्र को एक अछूत के हाथ से पानी पीते हुए उसने देख लिया।

राम शास्त्री का क्रोध भड़क उठा। उसने चिल्लाकर कहा—"सुग्रीव! तुम तुरंत घर चले जाओ। मेरे लौटने तक कहीं मत जाना। तुमसे एक जरूरी बात करनी है?"

सुग्रीव शास्त्री जवाब देने ही जा रहा था, तभी घोड़ा गाड़ी आगे निकल गई। रूपराम आपाद मस्तक काँप उठा और बोला—"छोटे सरकार! बड़े सरकार ने आप को मेरे हाथों से पानी पीते देख लिया है। अब वे मुझे प्राणों के साथ नहीं
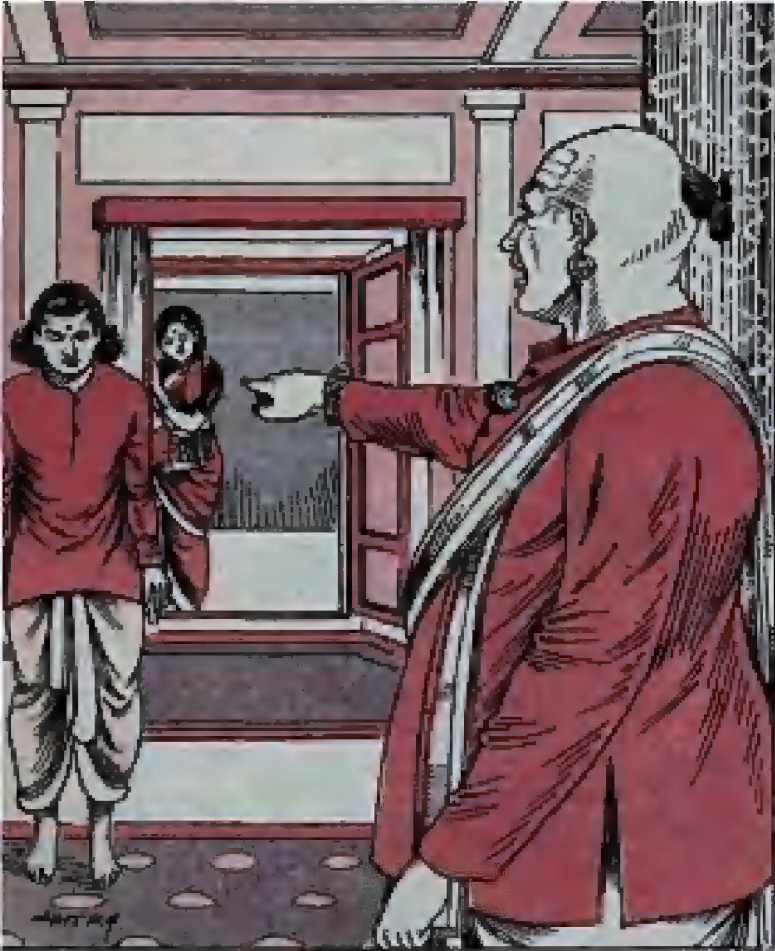
इसके बाद सुग्रीव शास्त्री ने घर लौटकर सारी बातें ज्यों की त्यों अपनी माता से बताई। वह घबराकर बोली–"सुग्रीव! तुम जानते हो, तुम्हारे पिता सनातन धर्म के कैसे पक्षपाती हैं? तुम अपनी गलती को स्वीकार करके उनसे क्षमा माँग लो।"

इस पर सुग्रीव शास्त्री ने आपत्ति उठाते हुए कहा–"माँ, मैंने जिन आदर्शों पर विश्वास किया, उनका पालन किया। इसमें मुझे पश्चात्ताप करने की कोई बात नहीं दीखती, यदि हालत नाजूक हो जायगी तो मैं जमींदारी से अपने हक़ को तिलांजली दे दूंगा।"

छोड़ेंगे। मेरी घरवाली और बाल-बच्चों का क्या हाल होगा?" इन शब्दों के साथ रूपराम आँसू बहाने लगा।

सुग्रीव शास्त्री जान गया कि उसका पिता उससे कौन सी खास बात करनेवाला है! लेकिन वह जरा भी विचलित नहीं हुआ। रूपराम की बात और थी; वह गरीब था, तिस पर अछूत!

"रूपराम! तुम्हें डरने की कोई बात नहीं; तुम हमारे पुरोहित के पुत्र गुणभट्ट के घर में गुप्त रूप से छिपे रह सकते हो। तुम्हारे परिवार के पालन-पोषण की बात वह खुद देख लेगा।" यों सुग्रीव शास्त्री ने रूपराम को हिम्मत बँधाई।

उस दिन शाम को राम शास्त्री घर लौटा। अपनी पत्नी के सामने सुग्रीव को बुलाकर कड़ककर पूछा–"आज दुपहर को तुमने कैसा काम किया? हमारे ब्राह्मण जमींदार वंश का व्यक्ति कहीं अछूत के हाथ का पानी पीता है? यह बात मालूम होने पर हमारी जाति के लोग तुम्हें जाति का बहिष्कार करेंगे। फिर भी इस अपराध का प्रायश्चित्त है। गाय का गोबर खाना उस प्रायश्चित्त का विधान है। इसके बाद तुम्हें थोड़े दिन तक उपवास करना होगा। मैंने इसके लिए आवश्यक सारा इंतजाम करने के लिए दीवानजी को आदेश दे रखा है।"

सुग्रीव शास्त्री ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह मौन रह गया। उस दिन रात को उसने अपने मित्र गुणभट्ट से मिलकर सारी बातें उसे सुनाई। गुणभट्ट ने सलाह दी कि इसका कोई हमें उपाय करना होगा। इसके बाद वह अपने परिचित मायापाल से जा मिला। मायापाल इंद्रजाल की विद्याएं अच्छी तरह से जानता था।

दूसरे दिन सवेरे गुणभट्ट सुग्रीव शास्त्री के घर आया और बोला–"दोस्त! तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस आफ़त से बचने के लिए मायापाल के साथ मेरे पिताजी भी मदद देने के लिए तैयार हैं।"

रोज की भांति सूर्योदय के होते ही जमीन्दार राम शास्त्री मंदिर में गया। पूजा समाप्त कर मंदिर से बाहर निकला, तो उसे पुरोहित भट्ट दिखाई दिया। पर पुरोहित रोज की भांति मंदहास किये बिना अत्यंत गंभीर दिखाई दिया।

राम शास्त्री ने विस्मय में आकर पूछा– "भट्टजी, क्या बात है? आप तो गंभीर मालूम होते हैं?"

भट्टजी ने गहरी सांस लेकर कहा– "महाशय, मेरे सामने एक जटिल समस्या पैदा हो गई है। थोड़ी देर पहले जब मैं ध्यान में मग्न था, तब अन्नपूर्णादेवी ने दर्शन

देकर मुझसे कहा–"भट्ट, जूता सीकर जीनेवाला रूपराम मेरा अत्यंत प्रिय भक्त है। उसके हाथ से जमींदार के पुत्र ने पानी पीकर कोई अपराध नहीं किया है। रूपराम मेरा सच्चा भक्त है, इसके प्रमाण स्वरूप मैं उसे एक वरदान देती हूं। लेकिन यह वर उसे एक बार ही काम देगा। चाहे तो जमीन्दार से कह दो कि वह इसकी परीक्षा ले। रूपराम चावल को पकाये बिना अन्न के रूप में बदल सकता है।"

जमींदार राम शास्त्री ने अविश्वास पूर्वक सर हिलाकर कहा–"अच्छी बात है, भट्टजी, रूपराम की परीक्षा लेकर देखेंगे कि वह कैसा भक्त है!"

एक-दो घंटे के भीतर जमींदार के महल के सामनेवाले अहाते में रूपराम की भक्ति की परीक्षा का प्रबंध किया गया। भट्ट कमंडलु जैसा एक लोटा लाया, सबके सामने उसे साफ़ किया। रूपराम के हाथ देने के पहले लोटे में थोड़ा पानी डालकर चावल के दाने भी गिरा दिये।

रूपराम ने लोटा अपने हाथ में लिया। एक बार मंदिर की ओर मुड़कर प्रणाम किया, तब लोटे की नली में से चार-पाँच बार जोर से फूंक लगाई। फिर क्या था, लोटे के पानी पर पके हुए चावल के दाने तिरने लगे।

इस अद्भुत को देख जमींदार राम शास्त्री चकित रह गया। उसने तत्काल रूपराम को दो एकड़ जमीन दान कर दी और अपने पुत्र सुग्रीव शास्त्री को गले लगाकर बोला–"बेटा, बुरा न मानो, मैं तुम पर नाहक़ नाराज हो गया था।"

उस दिन संध्या को सुग्रीव शास्त्री और गुण भट्ट मायापाल को देखने गये। सुग्रीव शास्त्री मायापाल को धन देने लगा तो उसने अस्वीकार करते हुए कहा–"इस इंद्रजाल का रहस्य मैंने जरूर बताया था, पर उसे बड़ी अक्लमंदी के साथ अमल करनेवाले भट्टजी और रूपराम हैं। मेरे कहे मुताबिक़ भट्टजी ने गुप्त रूप से लोटे की नली के मोड़ में चावल के थोड़े से दाने भर दिये और सबके देखते लोटे में पानी डालकर उसे साफ़ किया। जब रूपराम ने नली में से जोर से फूंक लगाई तब उसमें चिपके हुए चावल के दाने लोटे के जल में गिर पड़े और ऊपर तिर गये। यह इंद्रजाल जमींदार रामशास्त्री में बहुत बड़ा परिवर्तन ला देगा।"

इसके बाद मायापाल की कल्पना के अनुसार जमींदार रामशास्त्री ने अपनी जमींदारी के अंतर्गत रहनेवाले गरीबों व अछूतों के प्रति अत्यंत उदारता पूर्ण व्यवहार करना प्रारंभ किया और एक अच्छे व्यक्ति के रूप में लोक प्रिय बना।

बेकार लोग

चन्द्रगिरि के राजा भद्रसेन के मन में एक बार यह ख्याल आया कि यह जान ले कि उनके राज्य में कितने लोग बेकार हैं और वे क्या-क्या किया करते हैं। इसके बाद वेष बदलकर अपने मंत्री को साथ ले देश भ्रमण करने चल पड़े।

चलते-चलते वे दोनों एक देहात में पहुँचे। उस गाँव में पता लगाया गया कि बेकार लोग कौन-कौन हैं? आखिर उन्हें पता चला कि गोकर्ण नामक एक व्यक्ति बेकार है। गोकर्ण ने अपनी जवानी में खूब मेहनत करके काफ़ी धन कमाया था। अब उसका काम उसके बेटे संभाल रहे थे। राजा गोकर्ण को देखने गया। उस वक़्त गोकर्ण अपने घर के चबूतरे पर बैठ कर धान के बीज गिन रहा था।

राजा ने आश्चर्य में आकर गोकर्ण से पूछा–"यह तुम क्या करते हो?"

गोकर्ण ने अपना काम बंद कर ज़मीन पर कोई संख्या लिख दी और पूछा–"महाशय, आपने मुझसे क्या पूछा? ओह, समझ गया! वैसे बात कुछ नहीं। यूँही बैठे रहने से समय कटता न था, इसलिए बोरे के धान के बीजों की गिनती कर रहा था। मैं यह जानना चाहता था कि बोरे वजन में बराबर हो तो क्या उसके बीज भी बराबर होते हैं कि नहीं।"

भद्रसेन ने हँस कर कहा–"मैं समझता हूँ कि तुम्हारा अपना कोई काम नहीं है, इसलिए इस तरह बेकार अपना वक़्त बरबाद कर रहे हो!"

गोकर्ण ने क्रोध में आकर कहा–"राजगिरि के रंगनाथ से बढ़ कर मैं बेकार व्यक्ति नहीं हूँ।"

फिर क्या था, राजा कुतूहलवश राजगिरि के लिए चल पड़ा। राजा और

मंत्री जब उस गाँव में पहुँचे, तब उन्हें पता चला कि रंगनाथ गाँव के बाहर तालाब के पास है। उन्हें यह भी पता चला कि रंगनाथ का स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है, फिर भी उसके पुत्र उसे कोई काम करने नहीं दे रहे हैं।

भद्रसेन और मंत्री ने रंगनाथ के पास जाकर देखा। रंगनाथ एक छोटी सी कलछी से तालाब में से पानी निकाल कर पास के एक गड्ढे में गिरा रहा है।

राजा ने रंगनाथ से पूछा–"यह तुम क्या कर रहे हो?"

रंगनाथ ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया–"अजी, बात कुछ नहीं है, मेरे तो वैसे बैठे रहने की आदत नहीं है। इसलिए मैं यह जानने की कोशिश कर रहा हूँ कि इस कलछी से इस तालाब को खाली करना पड़े तो कितना समय लगता है।"

"इससे तुम्हारा क्या प्रोयोजन सिद्ध होगा?" राजा ने पूछा।

"मान लीजिए कि कभी अकाल पड़ गया, तब हमें किफ़ायत के साथ पानी को इस्तेमाल करना पड़ेगा। किफ़ायती के साथ इस्तेमाल करने पर इस तालाब का पानी कितने दिन तक काम देगा, यह हमें मालूम होगा।" रंगनाथ ने कहा।

इस पर राजा ने मुस्कुराकर परिहासपूर्वक कहा–"यह तो बड़ी दूर की बात है। फिलहाल तो तुम इस तालाब को खाली करने के प्रयत्न में हो न?"

"इसलिए तो मैं पानी को बेकार खर्च करने के बदले इस गड्ढे में डाल रहा हूँ।" रंगनाथ ने जवाब दिया।

"इस तरह के बेकार कामों में अपना वक़्त बरबाद करने के बदले तुम कोई उपयोगी काम क्यों नहीं करते?" राजा ने पूछा। रंगनाथ ने गुस्से में आकर कहा–"यदि आप उदयगिरि के श्यामलाल को देखेंगे तो न मालूम क्या कहेंगे?"

यह बात सुनने की देरी थी कि राजा और मंत्री उदयगिरि के लिए रवाना

हो गये। उदयगिरि एक समृद्ध गाँव था। उन्हें पता चला कि श्यामलाल एक युवक है और वह गाँव के बाहर एक पहाड़ के पास है। जब वे दोनों वहाँ पहुँचे, तब श्यामलाल अत्यंत उत्साह से साथ पहाड़ को खोद कर निकट की घाटी में डाल रहा था।

राजा ने श्यामलाल के निकट पहुँच कर पूछा—"भाई, यह तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं पहाड़ को खोद कर इस घाटी को भर रहा हूँ।" श्यामलाल ने कहा।

"सो किसलिए?" राजा ने पूछा।

"किसलिए क्या? मेरे बदन में ताक़त है। इसलिए मैं इस ख्याल से यह काम कर रहा था कि इससे गाँव का उपकार होगा। हमें पड़ोसी गाँव में जाने से यह घाटी बाधा डाल रही है।" श्यामलाल ने कहा।

"वैसे मैंने कई लोगों को देखा, पर तुम जैसे बेकार आदमी को मैंने कहीं नहीं देखा।" राजा ने कहा।

"तब तो शायद आप इस देश के राजा की बात नहीं जानते। उनके जैसे बेकार व्यक्ति को आप कहीं नहीं देख पायेंगे।" श्यामलाल बोला।

राजा के मन में क्रोध के साथ कुतूहल भी पैदा हुआ। उन्होंने पूछा—"यह कैसे?"

"मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ। राजा के सिर पर तो कई जिम्मेदारियाँ हैं। वे यह नहीं सोचते कि उनका समय कैसा मूल्यवान है। वे बेकार के कार्य-कलापों में अपना समय जाया करते रहते हैं। यदि वे मुझे जैसे बेकार व्यक्तियों की खोज में चल पड़े हों, तो भी मुझे आश्चर्य नहीं होता।" श्यामलाल ने कहा।

ये बातें राजा के दिल में जा चुभीं। उन्होंने तत्काल अपना भ्रमण समाप्त किया और राजधानी को लौट पड़े। उन्होंने बेकार रहनेवाले उन चारों व्यक्तियों के लिए उपयोगी काम करने के कार्यक्रम बनाये। इसके बाद उन्होंने कभी अपना समय बरबाद नहीं किया।

व्यर्थ प्रयत्न

राजा रुद्रवर्मा के देश में एक भयंकर संकट आ उपस्थित हुआ। उनके देश में समय पर वर्षा होती, अच्छी फ़सल भी हो जाती, पर खेत जब कटाई के लिए तैयार हो जाते, तब टिड्डी दल आकर सारे खेतों को बरबाद कर देता। इस कारण किसानों का बड़ा नुक़सान हो जाता। इस प्रकार हर वर्ष हो जाया करता था। परिणाम स्वरूप किसानों का अपार नुक़सान हो जाता, देश में अकाल पैदा हो जाता।

इससे तंग आकर राजा ने देश में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो व्यक्ति इस देश को टिड्डी दल के इस संकट से मुक्त करेगा, उसे उसकी ऊँचाई के बराबर का सोना पुरस्कार में दिया जाएगा।

उन्हीं दिनों में राजा को एक विचित्र समाचार मिल गया। एक किसान हर साल टिड्डी दल के आक्रमण से अपने खेत की रक्षा करके अपनी सारी फ़सल घर पहुँचा दे रहा है। राजा ने उस किसान को दरबार में बुला भेजा, वह किसान पचास साल की उम्र का था।

राजा ने किसान से पूछा–"हमने सुना है कि तुम अपनी फ़सल को टिड्डी दल के आक्रमण से बचा रहे हो! क्या यह बात सच है?"

किसान ने कहा–"जी हाँ, महाराज! आप ने जो सुना, सही है।"

"तुम्हारे अकेले की फ़सल की रक्षा हुई तो क्या हुआ? हमें तो सारे देश की भलाई सोचनी है। तुम किस उपाय से टिड्डी दल के आक्रमण से अपने खेत की रक्षा कर रहे हो?" राजा ने पूछा।

किसान ने संकोच करते हुए कहा–"महाराज, इसके वास्ते बड़ा भारी प्रयत्न

विमला दुबे

करना होगा! उस प्रयत्न में पहले हमारा विश्वास होना चाहिए! क्या सब का सहयोग प्राप्त करना मेरे द्वारा संभव है?" किसान ने कहा।

"क्यों नहीं? सभी किसानों का सहयोग प्राप्त होगा। मैं इसका जिम्मा लेता हूँ। इस साल तुम्हारे परिवार के सभी लोग मिलकर टिड्डी दल के संकट से मुक्त कर दो!" राजा ने कहा। किसान ने मान लिया।

उस साल अच्छी फ़सल हुई। कटाई का समय भी निकट आ गया था। बूढ़ा किसान और उसके परिवार के सभी लोगों ने मिलकर टिड्डी दल के संकट से बचने के प्रयत्न किये। नगर के चारों तरफ़ के खेतों में छोटे-छोटे पत्थर के खंभे गाड़कर उन पर रंग-बिरंगे झंडे बाँध दिये गये। रात के वक़्त ढफलियों तथा गीतों की ध्वनि सुनाई देती रही।

उस साल टिड्डी दल न आया। फ़सलों की कटाई हो गई। धान के ढेर लग गये। टिड्डी दल को रोकने के कार्यक्रम में निमग्न रहने के कारण किसान के परिवार ने अपनी फ़सल की कटाई नहीं की। दूसरे किसानों ने भी उनकी फ़सल काटने में मदद नहीं पहुँचाई। सब लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त रहे।

वृद्ध किसान ने राजदरबार में जाकर अपने पुरस्कार की बात उठाई। राजा का खजाना खाली था। वे उस किसान के बराबर का सोना कहाँ से ला देते?

"न्यायपूर्वक तुम्हारे पुरस्कार के लिए जनता को चंदा वसूल करना था। खजाने में से इतना सोना देना नामुमकिन है। मैं आज ही जनता के द्वारा चन्दा वसूल करने के लिए ढिंढोरा पिटवा देता हूँ।" राजा ने किसान से कहा।

ये बातें सुन वृद्ध किसान निराश न हुआ। उसने सोचा था कि इस साल जनता की भलाई हो गई है। वे उसके प्रति अवश्य अपनी कृतज्ञता प्रकट करेंगे।

मगर लोग केवल तांबे के सिक्के ही दे पाये। वे भी दरिद्रावस्था में थे।

इसके बाद राजा रुद्रवर्मा ने वृद्ध किसान को बुलवाकर समझाया—"फिलहाल तुम्हें इन तांबे के सिक्कों से ही संतुष्ट रहना पड़ेगा। हम कर ही क्या सकते हैं?"

"महाराज! यह क्या न्याय संगत है? आप ही फिर एक बार सोच लीजिए!" किसान ने कहा।

"इसमें अन्याय की बात ही क्या है? हमने सुना ही नहीं कि इस साल टिड्डी दल हमला कर बैठा है! इस बात का कोई सबूत भी नहीं है कि तुम्हारे परिवार ने टिड्डी दल के आक्रमण को रोक दिया है।" राजा रुद्रवर्मा ने कहा।

वृद्ध किसान को लगा कि मानों उसकी कमर ही टूट गई है! उसने तांबे के सिक्कों की ओर देखा तक नहीं, वह दरबार से चला गया।

लगा कि उस दिन रात को अकाश में अकस्मात बादल छा गये हैं। तारे भी कहीं दिखाई न दिये। बड़ी आवाज करते टिड्डी दल कहीं से आ धमका! जनता में हाहाकार मच गया।

रुद्रवर्मा ने वृद्ध किसान की खोज में अपने नौकर दौड़ाये, पर उन्हें मालूम हुआ कि वह किसान अपने परिवार के साथ उस गाँव को छोड़ चला गया है!

सुबह उठकर जनता ने देखा कि खलिहानों का सारा अनाज नष्ट हो चुका है। इस तरह उस देश में पुनः अकाल आ पड़ा।

अच्छी सीख

रामप्यारी ने अपने पुत्र और पुत्री की शादी एक ही साथ कर दी और अपनी बेटी को ससुराल भेजकर पतोहू को अपने घर ले आई। पतोहू के आने के बाद भी घर का सारा जिम्मा अपने हाथ में ले उसे एक नौकरानी की तरह मानने लगी।

पर्व और त्योहार के दिनों में रामप्यारी अपनी बेटी को बुलवा लाती, उसे उपदेश देती–"बेटी! तुम अपनी सास के हर आदेश का पालन चुपचाप न किया करो। वह तुम पर हुकूमत चलाएगी। जब-तब तुम लड़ती-झगड़ती रहोगी तो तुम्हारी सास तुम्हारे सामने दबती रहेगी। इतने दिन पाल-पोसकर तुम्हें मैंने इसलिए बड़ा नहीं किया कि तुम अपनी ससुराल में जाकर बेगारी करो। तुम घर की जिम्मेदारी अपने हाथ में लोगी तो तुम उस घर की रानी बन जाओगी।"

रामप्यारी के उपदेशों का असर उसकी बेटी पर कहाँ तक पड़ा, कहा नहीं जा सकता। पर उसकी पतोहू जब-तब ये बातें सुनकर उन्हें खूब समझ पायी। इसका परिणाम यह हुआ कि वह रामप्यारी तथा अपने पति को अपने हाथ के खिलौने बनाकर नचाने लगी। अब रामप्यारी का स्थान अपने घर में एक नौकरानी का हो गया था।

दो दोस्त!

लखनऊ में जब वाजिद अलीशाह शासन करते थे, उन दिनों में खलील और जलील नामक दो दोस्त थे। खलील एक बड़े व्यापारी का पुत्र था और जलील एक बड़े शायर का। वे बचपन में एक साथ पढ़ते और खेलते थे। बड़े होने के बाद वे दोनों आदर्श मित्रों के रूप में प्रसिद्ध हुए।

एक दिन रात को खलील अकेले वजीर के महल से होकर गुजर रहा था, तब उसके कानों में किसीके द्वारा कुरान के आयातों के पढ़ने की मधुर ध्वनि सुनाई दी। खलील उस आवाज की दिशा में बढ़ा। कुरान का पाठ दूसरी मंजिल से सुनाई दे रहा था। खलील उस मधुर ध्वनि से आकृष्ट हो फूलों की लताओं के सहारे दूसरी मंजिल पर चढ़ गया। वहाँ पर उसने देखा कि वजीर की इकलौती पुत्री शबाना जो अत्यंत रूपवती थी, अकेले कुरान के पठन में लीन है।

खलील लौटने को हुआ, तभी शबाना ने एक जगह गलत पढ़ा। खलील ने झट से उस गलती को सुधारा। शबाना कुरान पढ़ने में इस तरह मग्न थी कि उसने अपनी गलती को तो सुधारा, पर सर उठाकर न देखा।

खलील शबाना से हटकर थोड़ी दूर पर बैठ गया और जब भी वह गलत उच्चारण करती, उसे सुधारता गया। पर शबाना ने कभी अपना सिर उठाकर उसकी ओर न देखा। जब तक शबाना कुरान का पाठ कर रही थी, तब तक खलील वहीं बैठा रहा, जब शबाना कुरान का पाठ समाप्त कर दुआ पढ़ने लगी, तब वह उठकर चला आया। उस वक्त भी शबाना की दृष्टि उस पर न पड़ी।

प्रमोद सिंह

दूसरे दिन रात को भी खलील वज़ीर के महल की ओर चला। शबाना पिछली रात की तरह कुरान का पाठ कर रही थी। खलील दूसरी मंजिल पर चढ़ गया, दूर पर बैठकर शबाना की गलतियों को सुधार कर लौट आया।

इस तरह कई दिन बीत गये। एक दिन खलील लताओं के सहारे दूसरी मंजिल पर चढ़ रहा था, तब वज़ीर ने उसे देख लिया। वज़ीर के क्रोध का पारा चढ़ गया। फिर भी उसके मन में यह ख्याल आया कि देखें, क्या होता है, वह द्वार के पास पर्दे के पीछे छुप गया।

वहाँ के दृश्य को देख वह चकित रह गया। वज़ीर को यह स्पष्ट हो गया कि शबाना यह बात तक नहीं जानती कि खलील उसके पास ही मौजूद है।

इसके बाद एक हफ़्ते तक वज़ीर ने अपनी बेटी और खलील के व्यवहार को देखा। पर उनके कार्यक्रमों में कोई परिवर्तन न था।

वज़ीर की समझ में न आया कि इस विचित्र घटना को लेकर क्या किया जाय। उसने एक दिन बादशाह को यह समाचार सुनाया। बादशाह पहले अचरज में आ गये, फिर मुस्कुरा कर उन्होंने वज़ीर के कान में कुछ कह दिया।

एक दिन रात को शबाना के कमरे से उतर कर आनेवाले खलील को दो सिपाहियों ने पकड़ लिया और पूछा–
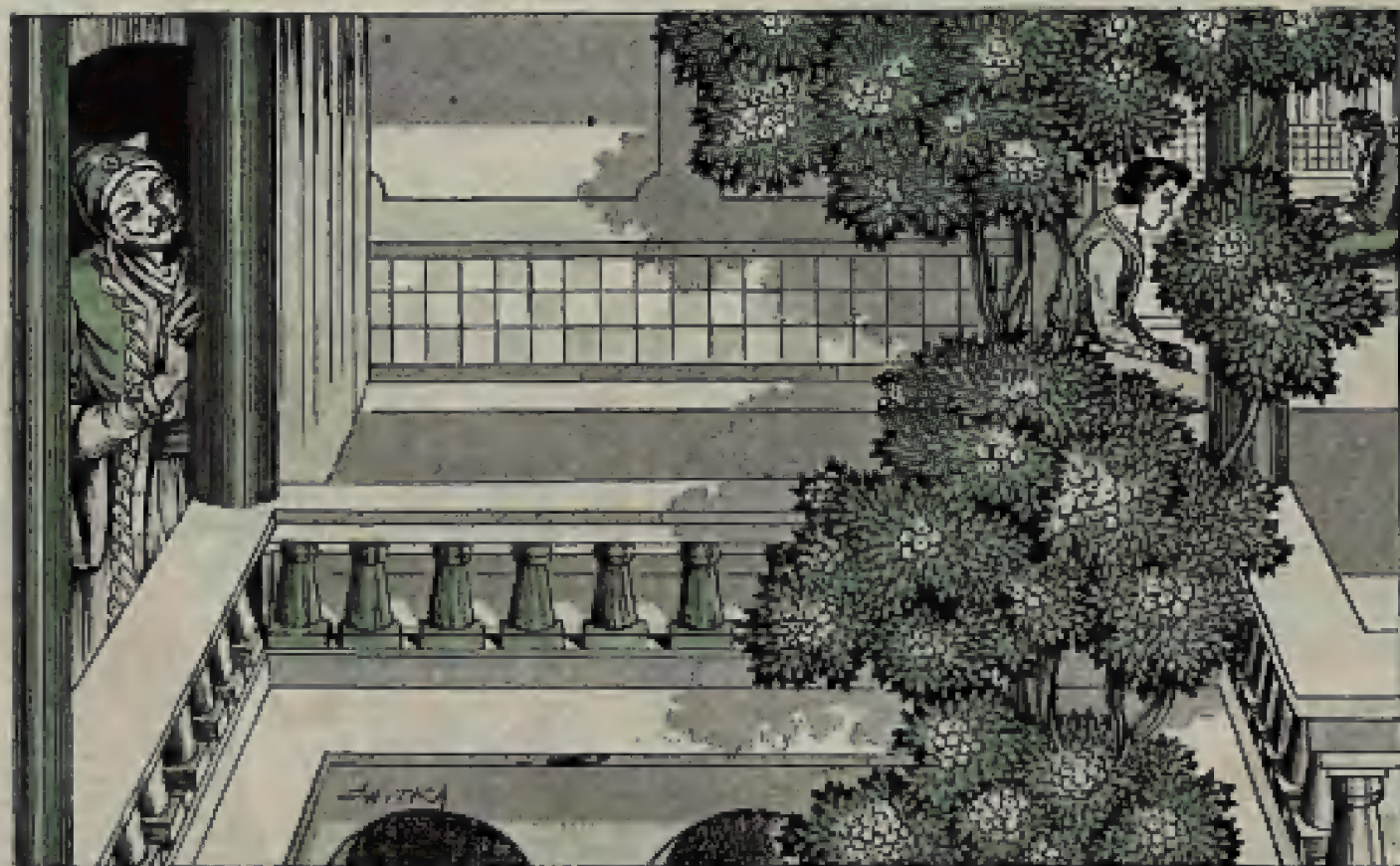
"बताओ, तुम महल पर क्यों चढ़कर गये?" खलील ने वज़ीर की पुत्री की इज्जत बचाने के ख्याल से कहा–"मैं चोरी करने गया था!"

"तुम अच्छे खानदान के मालूम होते हो! लेकिन तुम बताते हो कि तुम चोर हो! यदि कोई तुम्हें जामीन दे तो आज रात के लिए तुम्हें छोड़ देंगे। लेकिन कल सुबह तुम्हें बादशाह के सामने हाजिर होना है!" सिपाहियों ने कहा।

लाचार होकर खलील ने अपने पिता के पास जाकर जामीन देने को कहा। खलील के पिता ने साफ़ बताया कि मेरा बेटा अगर चोर है तो मैं उसे जामीन नहीं दे सकता! तब खलील अपने दोस्त जलील के पास गया, जामीन देने को कहा। जलील ने जामीन देने को मान लिया। सिपाई खलील को जलील के हाथ सौंपकर चले गये।

दूसरे दिन खलील को बादशाह के पास ले जाने के लिए सिपाही आ पहुंचे। पर जलील ने सिपाहियों से कहा– "कल रात को जो चोर पकड़ा गया था, वह मैं हूं। इसलिए मुझे बादशाह के पास ले जाओ।"

"असली चोर तो मैं हूं। यह तो मुझे जामीन देनेवाला मेरा दोस्त है।" खलील ने कहा। सिपाहियों की समझ में न आया कि किसको बादशाह की सेवा में हाजिर करे, आखिर लाचार हो वे दोनों को बादशाह के पास ले गये। बादशाह के पास दोनों ने अपने को चोर बताया।

आखिर बादशाह ने उनसे कहा–"तुम दोनों चोर हो! तुम दोनों को सजा देता हूं। खलील को वजीर की बेटी शबाना के साथ शादी करनी होगी। जलील को मेरे दरबार में शायर बनकर रहना होगा। यही सजा तुम दोनों के लिए उचित है।"

इसके बाद बादशाह ने असली बात दरबारियों को सुनाई। सबने बादशाह की उदारता की तारीफ़ की। खलील और शबाना की शादी ठाट से मनाई गई।

रावण जब अशोक वन में स्थित सीताजी को देखने पहुंचा, तब वह भयंकर राक्षस नारियों के बीच सर झुकाये आंसू बहा रही थीं, वह राम के बारे में ही सोच रही थीं।

रावण ने ऐसा अभिनय किया, मानो वह सीताजी के लिए कोई शुभ समाचार ले आया है, वह उत्साहपूर्ण स्वर में बोला–"सारा खेल समाप्त हो गया है! तुम्हारा राम युद्ध में मर गया है। अब तुम्हें मेरी पत्नी बनने में कोई बाधा नहीं है। मैं अपनी सारी पत्नियों में से तुम्हीं को बड़ी रानी बनाऊंगा। सुनो, मैं राम की मृत्यु का समाचार तुम्हें सुनाता हूं। राम वानर सेना को लेकर समुद्र पार करके लंका नगर में पहुंचा। यात्रा की थकावट के कारण वे लोग गहरी नींद सो रहे थे, तब प्रहस्थ ने एक विशाल राक्षस सेना को ले जाकर वानर सेना का नाश किया। रामचन्द्र के सोते समय प्रहस्थ ने ही उसका सर काट दिया। विभीषण भागने के ख्याल से आसमान में उड़ा, तब राक्षसों ने उसे भी पकड़ लिया। लक्ष्मण तथा थोड़े से वानर भाग खड़े हुए। सुग्रीव, हनुमान, जांबवान तथा अन्य वानर वीरों के सर कटे पड़े हैं। वानरों की लाशों के ढेर लगे हुए हैं।"

इसके बाद रावण ने उच्च स्वर में एक राक्षसी को आदेश दिया–"रामचन्द्र का सर लानेवाले विद्युज्जिह्व को तुम यहां पर

२२. लंका नगर पर आक्रमण

बुला लाओ। उससे कहो कि वह अपने साथ राम का सिर भी लेते आवे!"

विद्युज्जिह्व रामचन्द्र का सर तथा धनुष लेकर आ पहुँचा और रावण को प्रणाम करके खड़ा हो गया। इस पर रावण ने उससे कहा—"रामचन्द्र का सिर सीता के आगे रख दो। इस अभागिन को देखने दो कि आखिर इसके पति का क्या हाल हो गया है!"

विद्युज्जिह्व राम का सर सीताजी के सामने रखकर हट गया। उसके हाथ से रावण धनुष लेकर सीताजी से बोला—"सोनेवाले रामचन्द्र का सिर काटने के बाद प्रहस्थ उसका धनुष [illegible] आया है। अब तुम्हारे लिए मेरे सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।"

सीताजी ने राम के सिर को ध्यान से देखा, उनकी आँखें केशों तथा सर पर के चूडामणि को पहचान पाईं, तब वह जोर से रो पड़ी, और कैकेई की निंदा करने लगीं। इसके बाद वह बेहोश हो नीचे गिर पड़ीं। फिर होश में आने पर रामचन्द्रजी के सर को निकट लेकर उनके वास्ते बड़ी देर तक रोती रहीं। वह सोचने लगीं, रामचन्द्रजी की मृत्यु का समाचार लक्ष्मण के द्वारा सुनकर कौसल्या का कलेजा फट जाएगा। रामचन्द्रजी का वंश अंत हो जाएगा। यह सब मेरे कारण ही हो रहा है। इस बात को न जानने के कारण ही रामचन्द्रजी ने मेरे साथ विवाह किया है। मैं कैसी अभागिनी हूँ!

इसके बाद वह रोते हुए रावण से बोलीं—"तुम मुझे ले जाकर रामचन्द्रजी के शव पर डाल दो। पति-पत्नी को एक करके पुण्य-संपादन करो। मैं रामचन्द्रजी के साथ सहगमन करूँगी।"

उसी समय एक राक्षस वहाँ पर आ पहुँचा, रावण को प्रणाम करके सेनापति प्रहस्थ के आने की उसने सूचना दी। यह भी बताया कि सेनापति के साथ सभी मंत्री आये हुए हैं। यह समाचार मिलते

ही रावण अपने मंत्रियों से मिलने गया। ज्यों ही रावण ने अशोकवन को पार किया, त्यों ही राम का सिर और धनुष गायब हो गये।

उस वक़्त विभीषण की पत्नी सरमा सीताजी के पास आ पहुँची। सरमा बड़ी उत्तम स्वभाव की है। वह सीताजी के प्रति अत्यंत स्नेह रखती थी। उसने सीताजी को सांत्वना देकर कहा—"मैंने रावण के भय की भी परवाह किये बिना ओट में रहकर तुम्हारे और रावण का सारा वार्तालाप सुन लिया है। जानती हो, रावण यहाँ से अचानक क्यों चला गया है? भेरियों के नाद को सुन रही हो न? सैनिकों की तैयारियाँ हो रही हैं! युद्ध के लिए हाथी और घोड़े सन्नद्ध किये जा रहे हैं। रावण रामचन्द्रजी के साथ युद्ध करने के लिए सारी तैयारियाँ कर रहा है। राम और लक्ष्मण सभी राक्षसों का वध करके तुम्हारे कष्टों को शीघ्र ही दूर करेंगे। इसलिए तुम चिंता न करो! धीरज धरो, बहन।"

ये बातें सुनने पर सीताजी का दुख थोड़ा शांत हुआ।

सरमा ने सीताजी से आगे यों कहा: "मैं आकाश-पथ से रामचन्द्रजी के पास जाकर तुम्हारा कुशल समाचार उन्हें दे

आना चाहती हूँ। जानती हो, मैं आकाश में गरुड़ से भी अधिक वेग के साथ प्रयाण कर सकती हूँ?"

"मैं इस बात पर यक़ीन करती हूँ कि तुम आकाश में ही नहीं, पाताल में भी जा सकती हो! यदि तुम मेरी इच्छा की पूर्ति करना चाहती हो तो इस बात का पता लगाओ कि इस वक़्त रावण क्या कर रहा है? मुझे तो इस समय रावण का भय ही अधिक है। रावण क्या करने जा रहा है? इस बात की सूचना देने पर मैं तुम्हारे प्रति अत्यंत कृतज्ञ रहूँगी।" सीताजी ने विनयपूर्ण शब्दों में कहा।
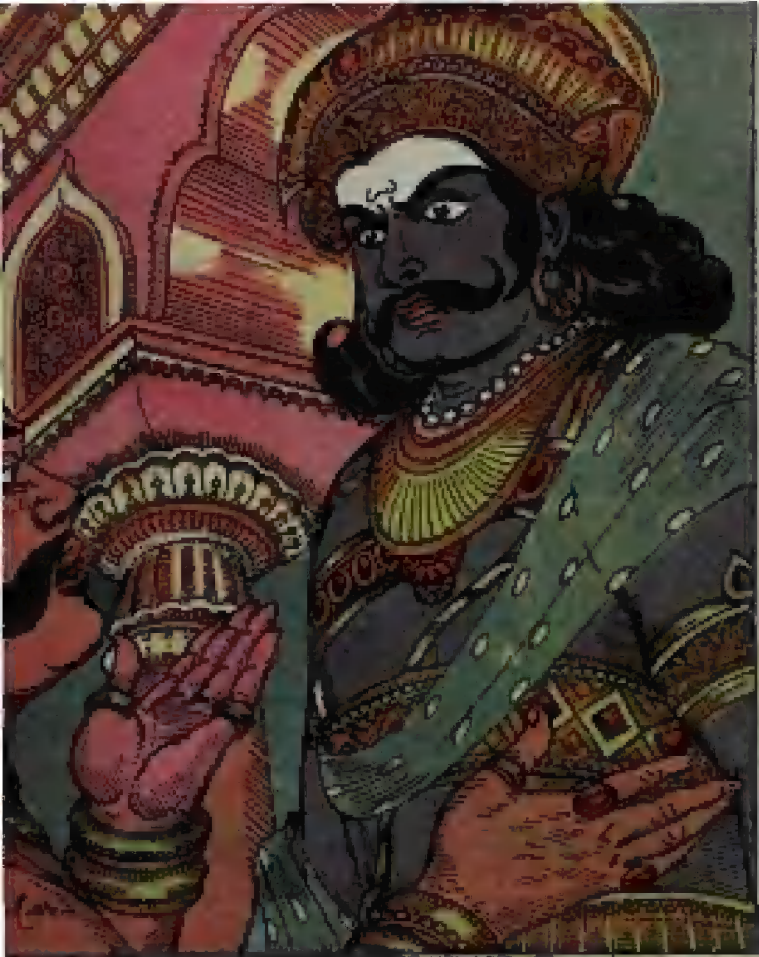
थी, तभी वानर सेनाओं के भेरी-नाद, शंखनाद और सिंहनाद भी उन्हें सुनाई दिये। रामचन्द्रजी लंका नगर पर आक्रमण करने निकल पड़े।

रावण वानर सेनाओं का कोलाहल सुनकर सभा में उपस्थित अपने मंत्रियों से बोला–"तुम लोगों ने इसके पूर्व हनुमान का समुद्र पार करना और राम की सेना की भी बड़ी तारीफ़ की। मैंने सारी बातें सुन लीं, अब रामचन्द्र के पराक्रम का स्मरण करके निराश हो तुम लोग एक दूसरे के चेहरे ताक रहे हो। मुझे ऐसा मालूम होता है कि तुम लोग शत्रु के भय से आतंकित हो!"

ये बातें सुन माल्यवंत नामक एक राक्षस बोला–"राजन, रामचन्द्रजी यदि हम से ज्यादा बलवान हैं तो उनके साथ संधि करने में बुराई ही क्या है? रामचन्द्र तथा हमारे बीच वैर का कारण सीताजी है। यदि हम सीताजी को रामचन्द्र के हाथ सौंप दे तो हमारे बीच कोई शत्रुता न होगी।" इस संदर्भ में माल्यवंत ने रावण को इस बात की याद दिलाई कि उसे वानरों व भल्लूकों के द्वारा मृत्यु न पाने का कोई वर प्राप्त नहीं है।

माल्यवंत की बातें रावण को जरा भी रुचिकर न लगीं। उसने माल्यवंत की

इसके उपरांत सरमा ने सीताजी के आँसू पोंछ दिये। तब तुरंत वह रावण के पास चली गई। रावण तथा उसके मंत्रियों का सारा वार्तालाप सुनकर लौट आई और सीताजी से यों बोली–"तुम्हें मुक्त करने की सलाह रावण की माँ तथा उसके वृद्ध मंत्री ने दी। उन लोगों ने यहाँ तक चेतावनी दी कि अन्यथा रावण के प्राणों के लिए खतरा है। मगर रावण ने उनकी बातों की उपेक्षा की; युद्ध क्षेत्र में जब तक रावण का वध न होगा, तब तक वह तुम्हें मुक्त न करेगा। उसके अन्य मंत्री भी उसके इस कथन का समर्थन कर रहे हैं।" सरमा सीताजी से बात कर ही रही

और तीक्ष्ण दृष्टि प्रसारित कर कहा– "तुमने हित की बातें बताने का अभिनय करते हुए धोखे की बातें क्यों बताईं? राम तो एक साधारण मानव है। अकेला है। पिता के द्वारा त्यक्त है। बानरों की सहायता पर निर्भर है। वह जंगलों में भटक रहा है। ऐसे व्यक्ति को तुम समर्थ कैसे बता रहे हो? मैं समस्त राक्षसों का स्वामी हूँ! समस्त देवताओं को थर्रा देनेवाला पराक्रमी हूँ। मेरी तुलना तुम राम से करते हो? शायद तुम यह सहन न कर सकते हो कि तुम्हारी ही जाति में एक ऐसे महान वीर है। या शत्रु के प्रति पक्षपात के कारण तुम्हारे मुँह से ऐसी बातें निकली होंगी। अन्यथा कोई दूसरा कारण नहीं हो सकता। मैं वन से सीताजी को इसलिए नहीं लाया कि उसे फिर से लौटा दूँ। मैं रामचन्द्र के साथ युद्ध करने से क्या डरता हूँ? यदि रामचन्द्र ऐसे बलवान हों तो मेरा सिर काटने दो, मगर मैं उसके सामने अपना सिर नहीं झुकाऊँगा।"

माल्यवंत को लगा कि रावण को क्रोध आ गया है, इसलिए वह चुप रह गया। इसके बाद उसने रावण को आशीर्वाद दिया कि उसकी विजय हो, तब वह घर चला गया, इसके बाद रावण ने अपने मंत्रियों के साथ सुरक्षा के संबंध में मंत्रणा की।

लंका नगर के पश्चिमी द्वार पर मेघनाद, उत्तरी द्वार पर शुक और सारण तथा मध्य भाग में विरूपाक्ष को राक्षस सैनिकों के साथ सन्नद्ध रहने का रावण ने आदेश दिया। सबने रावण की जयकार की, तब वह अपने अंत:पुर को चल पड़ा।

रामचन्द्रजी जब सभी वानर प्रमुखों के साथ लंका नगर में पहुँचा, तब वे परस्पर यों कहने लगे–"यही लंका नगर है! इस पर विजय पाना देवताओं के लिए भी संभव नहीं है। ऐसी हालत में अब हमें क्या करना है?"

इस पर विभीषण ने उन्हें समझाया– "मेरे चारों मंत्री अभी लंका हो आये हैं।

वे पक्षियों के रूप में जाकर वहाँ के सारे प्रबंध देख आये हैं। प्रहस्थ अपनी सेना के साथ पूर्वी द्वार तथा महोदर और महापार्श्व दक्षिणी द्वार की रक्षा में खड़े हैं, मेघनाद पश्चिमी द्वार तथा विरूपाक्ष मध्य भाग की रक्षा के लिए नियुक्त हैं।"

विभीषण के मंत्रियों ने भी रामचन्द्रजी को लंका का वृत्तांत सुनाया।

इसके बाद विभीषण ने रामचन्द्रजी को सावधान रहने के लिए बताया कि रावण के साथ उसीके समान बल एवं पराक्रम रखनेवाले बीस लाख राक्षस हैं। रामचन्द्र ने अपने योद्धाओं को समझाया कि किसे किसके साथ युद्ध करना है।

नल पूर्वी द्वार पर स्थित प्रहस्थ के साथ, अंगद दक्षिणी द्वार पर स्थित महापार्श्व और महोदर के साथ, हनुमान पश्चिमी द्वार पर तथा उत्तरी द्वार पर स्थित रावण के साथ रामचन्द्रजी युद्ध करेंगे। रामचन्द्र के साथ लक्ष्मण भी रहेंगे। सुग्रीव, जांबवान तथा विभीषण मध्य भाग में स्थित सेना के साथ युद्ध करेंगे। यह भी आदेश दिया गया कि युद्ध के समय वानर मानव रूप धारण न करें। ऐसा होने पर ही पहचाना जा सकता है कि कौन हमारे हैं और कौन नहीं हैं। राम, लक्ष्मण, हनुमान सुग्रीव, नील, अंगद और विभीषण मात्र मानव रूप में युद्ध करेंगे।

यह निर्णय करने के पश्चात रामचन्द्रजी लक्ष्मण के साथ अत्यंत सुंदर सुवेल पर्वत पर पहुँचे। उनके साथ विभीषण इत्यादि भी उस पर्वत पर जायेंगे और वह रात वहीं पर बिताने का निश्चय हुआ। सुवेल पर्वत पर से अवलोकन करने पर त्रिकूट पर्वत पर निर्मित लंका नगर दिखाई देगा। रामचन्द्रजी इत्यादि ने लंका नगर के साथ वहाँ के राक्षसों को भी देखा। इसके बाद वानरों ने सिंहनाद किये।

इतने में सूर्यास्त हो गया। सबने वह रात सुवेल पर्वत पर बिताई। प्रातःकाल होते ही उन्हें लंका नगर के वन और

उपवन अत्यंत सुंदर दिखाई दिये। लंका नगर में सबसे ऊंचा मकान रावण का था। उसके चतुर्दिक ऊंचा चैत्य प्रासाद था।

इतने में सुग्रीव को रावण दिखाई दिया। सुग्रीव ने उससे कहा–"हे रावण, मैं रामचन्द्रजी का मित्र और सेवक हूं। मैं तुम्हें प्राणों के साथ नहीं छोड़ूंगा।"

"तुम्हारा नाम सुंदर कंठवाला है, लेकिन याद रखो कि तुम्हें मैं कंठहीन कर दूंगा।" यों कहते रावण सुग्रीव पर हमला कर बैठा। इस पर दोनों के बीच भयंकर द्वन्द्व युद्ध हुआ। बड़ी देर तक दोनों ने समान रूप से युद्ध किया। क्रमशः रावण थक गया और माया का सहारा लेने लगा। इसे भांपकर सुग्रीव आसमान में उड़ा। रावण ने सोचा कि सुग्रीव पुनः लौट आएगा, पर वह रामचन्द्रजी के पास जाकर उतर पड़ा।

रामचन्द्रजी ने सुग्रीव को डांटते हुए कहा–"तुमने मुझसे बताये बिना ऐसा क्यों किया? राजाओं को इस प्रकार के साहस नहीं करने हैं। हम लोग यह सोचकर डर गये कि तुम पर न मालूम क्या बीत रहा है? मेरा निश्चित संकल्प है कि रावण का उसके रिश्तेदारों के साथ वध करके विभीषण का राज्याभिषेक करूं और तब अयोध्या को लौट जाऊं!"

"रामचन्द्रजी! सीताजी का अपहरण करनेवाला वह दुष्ट रावण दिखाई दे तो मैं कैसे चुप रह सकता था?" सुग्रीव ने उत्तर दिया।

इसके उपरांत सब लोग पर्वत से उतरकर नीचे आये। सब लंका पर आक्रमण करने के लिए जल्दी मचाने लगे, तब रामचन्द्रजी के पीछे विभीषण, सुग्रीव, हनुमान, जांबवान, नल, सुषेण, नील तथा लक्ष्मण भी चल पड़े। उनके पीछे महासमुद्र जैसी वानर सेना चल पड़ी।

राम और लक्ष्मण ने लंका नगर के उत्तरी द्वार पर घेरा डाल दिया। उस द्वार की रक्षा रावण स्वयं कर रहा था। वहां पर राक्षसों के अपार आयुध और कवच रखे हुए थे।
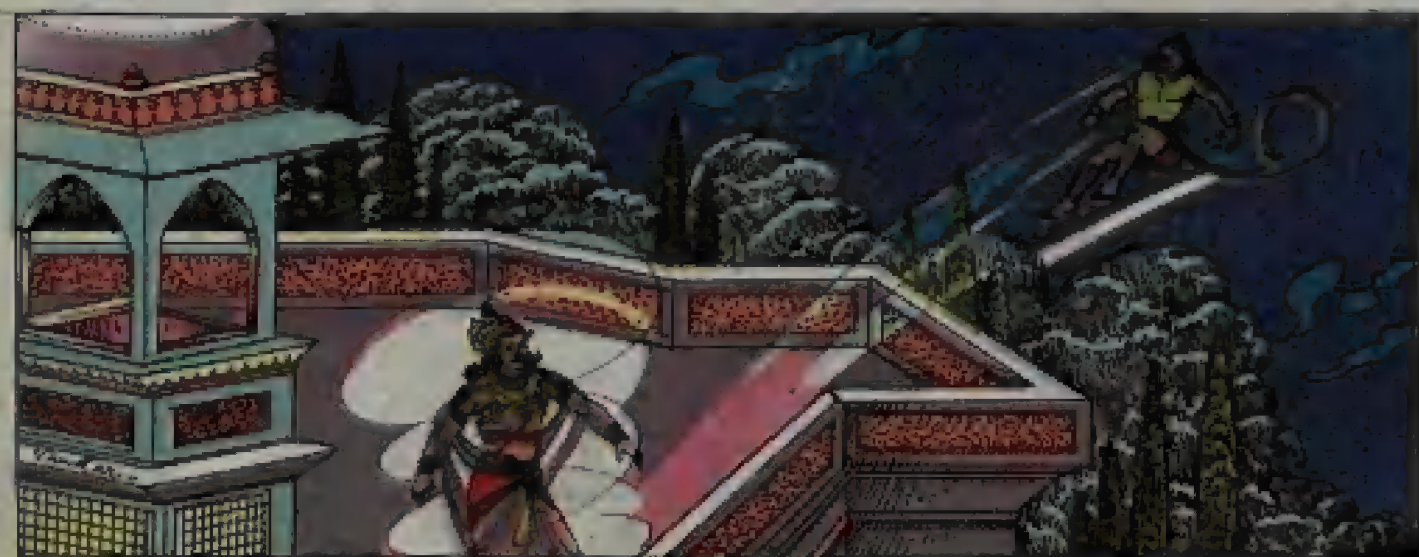
यथा पुष्करपर्णेषु
पतिता स्तोय बिंदव:
न श्लेष मुपगच्छंति
तथा नार्येषु संगतम् ॥ १ ॥

[कमल-पत्रों पर जैसे पानी की बूँदें एक दूसरे से नहीं मिलतीं, वैसी होती है दुष्टों की मैत्री भी।]

यथा पूर्वम् गज स्स्नात्वा
गृह्य हस्तेन वै रज:
दूषय त्यात्मनो देहम्
तथा नार्येषु संगतम् ॥ २ ॥

[हाथी जैसे पहले साफ़-साफ़ स्नान करके, तुरंत अपनी सूंड से धूल उठाकर सारे बदन पर डाल लेता है, वैसी होती है दुष्टों की मैत्री।]

यथा शरदि मेघानाम्
सिंचता मपि गर्जताम्
न भव त्यंबु संक्लेद:
तथा नार्येषु साहृदम् ॥ ३ ॥

[जैसे शरद काल के मेघ बरसने जैसे गरज उठते हैं, पर जमीन भीगती नहीं, वैसी होती है दुष्टों की मैत्री भी।]

दुष्टों की मैत्री

Photo by P. V. Subramanyam
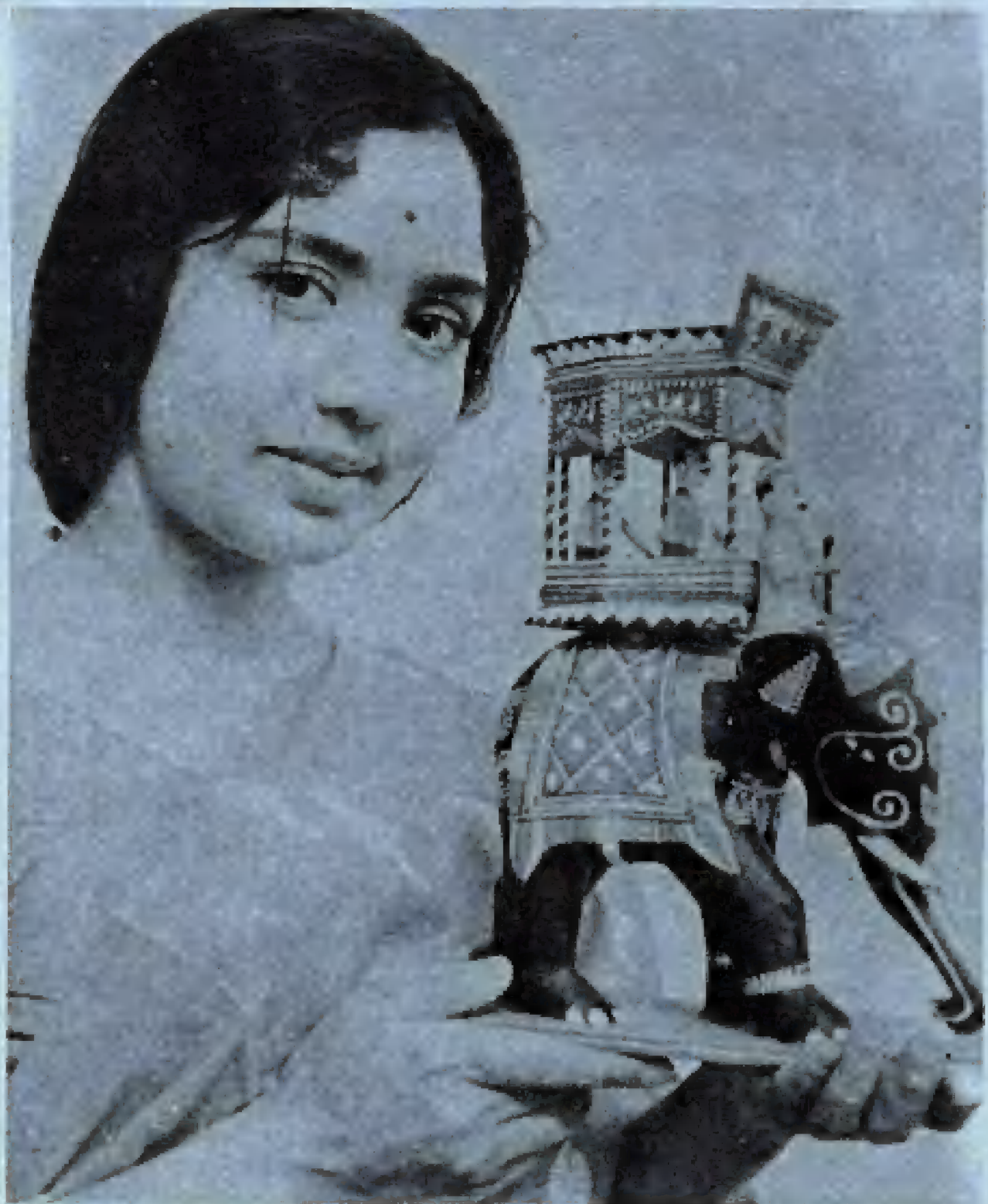
पुरस्कृत परिचयोक्ति

हाथी के ऊपर महंगा हौदा!

प्रेषक : अरुणकुमार

Photo by P. Sundaram

लक्ष्मीबाई नगर,
नई दिल्ली - २३

कितना सस्ता मेरा सौदा !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★
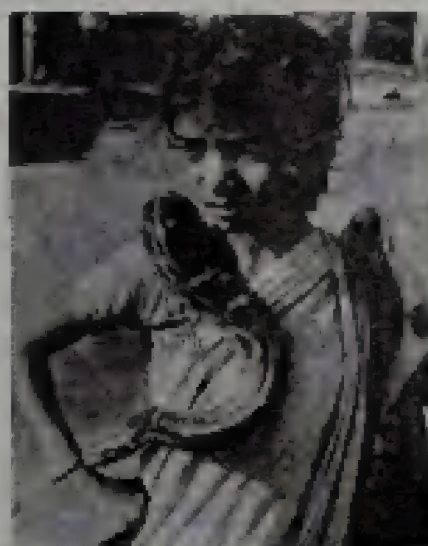
★ परिचयोक्तियाँ अगस्त १० तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अक्तूबर के अंक में प्रकाशित की जायेंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras 600 026; Controlling Editor: NAGI REDDI
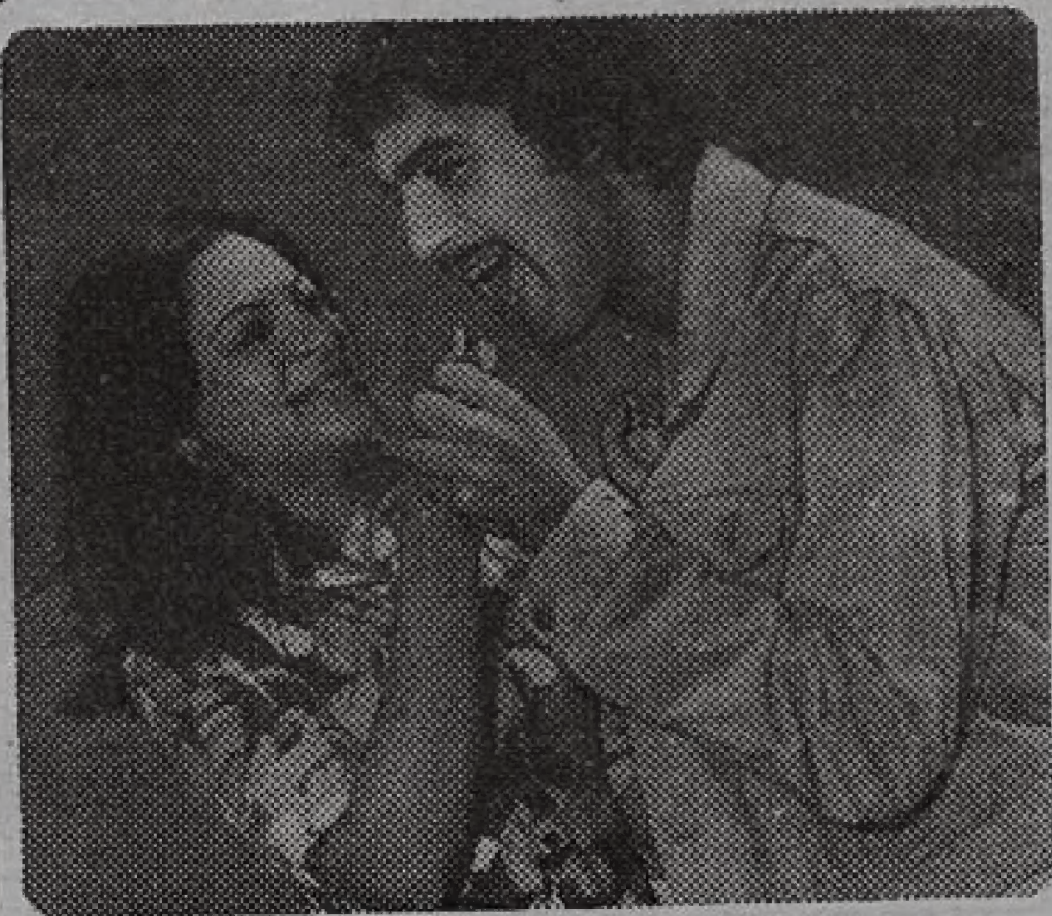
मधुर क्षणों के लिए !

उसे पॅरी की इस स्वादभरी दुनिया में
से एक (या सब की सब) दे दीजिए :
चॉकलेट एक्लेर्स, कोकोनट एक्लेर्स,
पाइनेपल लिक्युएर्स, लैक्टो बॉन-बॉन्स
और ऑरेन्ज कैन्डीज़.

पॅरी जीवन को मधुर बनाती है!

पॅरीज़ कॉनफ़ेक्शनरी लिमिटेड
मद्रास ६००००१.

PRS/2146 HN

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए ५०० मज़ेदार पुरस्कार!
इसके अलावा भी अन्य शानदार पुरस्कार
जीतने का सुअवसर!
क्या बता सकते हो कि इनमें कौन सा चित्र असमान है?
1 2 3 4 5
Cadbury's MILK CHOCOLATE GEMS
जल्दी करो!
अपना उत्तर, कॅडबरिज जेम्स के एक खाली प्लास्टिक पैकेट के साथ भेजो। पहले ५०० सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा। अतः तुम्हें अपने गिफ्ट चेक पर ४०० रुपये का एक और शानदार इनाम जीतने का मौका मिलेगा— भाग्यशाली लोगों के लिए अतिरिक्त लाभ।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"लूटो जेम्स का मज़ा" डिपार्टमेंट C-20
पोस्ट बॉक्स नं. ४६, थाने ४०० ६०१
प्रवेश-पत्र पहुंचने की अंतिम तिथि:
१६ सितम्बर १९७६
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅडबरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-39 HN

CHANDAMAMA (Hindi) AUGUST 1976 Regd. No. M. 5452

मित्र-संप्राप्ति